A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 33 Subject Medicine

Name of MSS Vaidyaka

Author Not available

Period – – Folios 88 (00a to 00c + 1 to 200)

Script Sanskrit Source Prithipal Singh

Missing Folios 3, 10, 31, 32, 38, 39, 47, 55–57, 71, 72, 78, 86, 88, 91–95, 97, 104–199

ते॥६४॥अथविसूचीकारोगउ
विकारःसोरठा॥तेलतिलांको
आंनि।करपदमरदनकीजाइ।
नासेविसूचिकाजांनि।सिद्धिजोग
पंडितकहे॥६५अर्थ।तीलीनोते
लआंणिनें।हाथेंपगेंमरदनकीजे
विसुचिकाबहिरोगजाइ।सिद्धी
जोगपंडितेंकह्यो॥६५।सून्यता
कोगषयचौपई॥मेंधाकोवचूंक
तिलतेल।तापनकरोचूरणकामे
ल।करपदमरदनकीजाइ।नासे
विसुचिकारोग।पेमहुपरलेपकर

..नूपीपरे। तामहि विनकयालि
। पीसिपीनुजलतससों। मंदाग्नि
करूंटालि॥ ६७ अर्थ सीधालूंणह
रडेपीपर। तेमांहि चित्रकयालि
। पीसीनेंपांणीनुग्न पीपीवे तोमंद
ग्निटाले॥ ६८॥ अथ रूक्षाकरीगु
टिका:॥ त्रिफला त्रिकूटालोन
हिंगु। अरूजवाइनमेलि। समक
रिगोलीकीजीइं। मंदाग्नीकुंटा
लि। ६९ अर्थ त्रीफला। त्रिकूटा लुं
ण हींग। वलि अजवाइण सम ब
राबरगोली कीजें। मंद अग्नीनेंटा

आतमायुर्विनिर्दिशेत् ॥१७॥ जेपु
रुषनइ चिटांगुलीनी रेषा। तर्जनी
नेदइ। तेहपुरुषनइं आतआयु
होइ। अनेवली अंगूठो। तर्जनी (
अंगुली लगेंजाइ। तेहनें आतवर्ष
लगी आयुप्रमांणकहवइ। अर्थक
निष्टांगुलीदेशात्। रेषागतातीमध्य
मा। अविछिन्नानिवर्षाणि। षष्टीमा
युर्विनिर्दिशेत् ॥१८॥ जेहनइं चि
टी अंगुलीथी। कपहरी रेषा अना
मिका लगइंजाइ। तेहनें साठिव
रसहोइ। ३। रेषास्तिर्यक्तिर्स्रेशां
। आन्यायुधनहीनता। रेषाचतुष्टयं

यस्य। वज्ररेषा द्दरिद्रता ॥१९॥ जे
हनें घणी रेषा होइ। अथवा स्त्री नइं
होइ घणूं केह्ने आपामइ। अनें घोडी रे
षा धनहीन होइ। रेषा च्यारि मुख्य हे
इं। ते अतिवारु। पूरुष लोक मांहि
पूज्य पामइं ॥ अर्थ। अंगुष्टोद्दरम
ध्यस्था। जवो जस्य विराजते। उ
त्पन्न भक्ष्य भोगी च। स नरः सुख
मेध्यते ॥ २०॥ जे पुरुष नणे अंगू
ठे जव होइ। ते पुरुष जे रूपाजि
उं होइ। दिवस अस्तें। पाइ सूवे
। वासो घर मांहि। धन अनइं धा
न्य नो न रहे। अनें नोगी होइ ॥ अर्थ ५

॥ अनामिकापर्वयद्वामुलंघे। क
निष्टिकावर्षशतंच जीवितं। नव
त्यश्रीतिर्विंगामेवसप्तती। तदर्द्ध
नंवरवलुषष्टिजीवितं॥ ११ ॥
जो कनिष्टा। अनामिकानापर्वन
लंघीनें। उपरिंजायतो। सामुद्र
क शास्त्रवादिद्रसकहीयें। असी
वर्षआयुहोस्ये। अनेंजोसमिपं।
होइतो। साठिवर्षआयुकहिवो
। पर्वथकीहेवेरीहोइतो। जवर
हेवेरीरेषाहोइतो। वर्ष ७० आयु
होइ। गांठीहेतेरीहोइतोजव। ५।
लेगोतो ७० वरस आयुहोइ॥ श्र

र्थः॥ ललाटेयस्यदृश्यंते। रेखा
त्रयमनागमम। षष्टीवर्षंचनिर्दिष्टं
।शल्पाह्वौद्विरेषके॥२२॥ जेपुरु
षनेंनिलाटरेषा३। प्रत्यक्षप्रमा
णवलयाकारिनिरतिदीसइ।
।तेपुरुषनेंअसीवरसतणोआ
युनिरतोहोइ। जेपुरुषतणइ।
निलाडिरेषा३होइतो। तेहनइ
साठिवरसतणोआयुहोइ। स्त्री
नइंहोइ। जेहनेंबेरेषाहोइते
हनेंवीसवरस। तणोआयुहोइ
।अर्थः॥ अनिमेधाध्वकीर्त्तिश्च
विक्रांताविनयाभरवी। श्रं...

सही ॥७२॥ प्रमेहचूर्ण: ॥ संषाहू
लीए लची । सिलाजीत सममर्षफ सी
तलीस्सोंपीजाइं । जेपरमेहविहंग
॥७३॥ अर्थ: ॥ संषाहोली एलची स
तसीलाजत । बरोबरलेनां । सीतल
गांलीसुंपीजें । जेपरमेऊजानोरहे
॥७३॥ अथ मूत्रकृछ्ठको चूरण दो
हरा: ॥ एलावासागोषरू । मऊले
ठीसुरलाइ । पीपरएरंफरेणुका ॥
अस्मनेदसुंमिलाइ ॥७४ अर्थ: ।
एलायची । जवासा गोषरू मऊले
ठीमीलाइ । पीपरीएरंफमीज । संषा

होली। पाषाण भेद मिलावे ॥७४॥
क्काथ जो या को दीजीइ। सिलाजि
त मधु घालि। मूत्रकृच्छ अरु पथ्य
री। फल निपरमे ऊटाति ॥७५ अर्थः
एह नो क्काथ करीके दीजें। सीला
जित मत घालीके। मुत्रकृछ पथरी।
वली प्रमेह जावे ॥७५॥ मूत्रकृछ
को चूरण दोहरा। शिवा त्रुफला जव
षार धरि। जल सूं पीजे आंनि। मूत्र
कृछ सब चोष को। नासे इन को
जांनि। ७६ अर्थ हरडे एलायची
जवषार। पांणी सुं पीजें। मूत्र विरोध 6

अनेकप्रकारेंकोनासे ॥७६॥चूर्ण॥
॥ एरंडजवासाएलची।पीसकूंउत्तम
मिलाइ।दधिसोंपीजेंप्रातनवि
मूत्रकृछ्रजुमिलाइ॥७७॥अर्थः॥
एरंडजवासाएलची।एबरोबरमि
लावे।दहिसोंपीवेंप्रातसमे।मूत्र
शोधनमिटे॥७७मूत्ररोधकोकाथ
छंदः॥गोषरूजवासाहरडेआनि
।पाषाणभेदकनियालजांनि।इ
हक्काथपीवहूसहतसोंमलि॥
सोमूत्ररोधकूंदेइरेलि॥७८॥अ
र्थः॥गोषरु।जवासा हरडेल्यावे

पाषाणभेद।गोटीनजाञ्ज्।इन्द्रका
थपीवऊ।सहतसुंपिवे।सोमुत्ररो
धकुंदेइरेलि॥७८ अर्थः॥गोषरू
जवासा हरफैल्मावे।पाषाणभेद
गोटीनजाञ्ज्।इन्द्रकाथपीवऊ।
सहतसुंपीवे।सोमुत्ररोधकुंमिट
वे॥७८॥मिसकोचूर्ण॥दोहरा
॥त्रिफलासेंधागोषरू।बीजक
कटीपाइ।तसनीरसुंपीजीइ।मू
त्ररोधनरहाइ॥७९ अर्थः॥त्रि
फलासेंधागोषरू।बीजकाकमी
नां।तसोदकपांणीसुंपीवे।मुत्ररो

[illegible]है॥७९॥ अथ पथरीरोगप्रतिका
र दोहरा॥ वरुणा सूंठ जगोषरू। का
थ करऊं समभाग। पावऊं गुडजव
षार धरि। वात पथरी जाय॥८० अ
र्थः॥ सुंहीजणासुं ठगोषरू। काथ
करके बरोबर लेनां। गुडजवषार
मीलावीनें पीवेतो। पथरी वात जा
य॥८१॥ पथरीप्रतिकार॥ वरणा
अरणी सूंहीजणा। गोषरू सुंठ विहर
डे मिलाइ। अस्तनेद कनिअलफ
ल। सींगुलवा समभाइ॥८२ अर्थः
वरणा अरणी सूंहीजणा। गोषरू।

सुंविहरके।मिलावणं।पा...
द बोटिलजाल्।संपन्नवकीकोटी
बरोबरलेनी॥८२॥कायसो...
कोलेइ।नूंणहींगाजवषारपरी॥
रोगपथरीदेइ।नासमूत्रकृछअं
ग्रहरदुष॥८२ अर्थः॥याकोक
पलीजे।नूंणहींगाजवषारथरीनें
पथरीरोगकुंदेवे।तोमूत्रकृछ्र उ
दररोगजाइ॥८२॥अथमृगीरोग
प्रतीकारः उनमादकफविमूचि
का काय दोहरा॥पूहकरमूल
चिराइता।ब्राह्मीसूठिकचूर।दा

कूठपदमूरदारुवच। मोथापी
परमूल॥ ८३ अर्थः॥ पूहकरमूल
चिरायतो। ब्राह्मीसूंठि नरकचूर
दारुहलद्द। देवदारूवच। मोथा
पीपलामूल॥ ८३॥ अजयाकोठ
मोस्वेतबक। कीजेंक्काथजोआं
निकें। महारोगउन्मादकफ। रोगवि
सूचिकामांनि॥ ८४ अर्थः॥ पीतपा
पडोकोठ। स्वेतबक। क्काथकीजेंआ
नीकें। महारोगउन्मादकफ। विसु
चिकारोगजाइ॥ ८४॥ अथमृगीके
नामदोहरा:॥ मिरिवसउकमाहि

धरि। दीवसइ कइस प्रमांण। जस
सोनामसजो दीजीइं। होइमृगीकी
हांनि॥ ८५ अर्थ। मिरचंतउटक्रिमा
धमायसि दिन २१ प्रमांण। जनमे
नामदीजैंतो। होइमृगीकोनास
॥ ८५॥ अथ मृगीकोनास॥ ब्राह्मी
सघृतकवीवरस: । संषाहोलिया
लीगोघृतइहनासकर। मृगीउ
न्मादहीगाली॥ ८६ अर्थ ब्राह्मीघी
कवीवरससंषाहोलीरस। गाय
नोघीएसर्वनीनास। मृगीउन्माद
जाइ॥ ८६ अथ सत्रोधनास।

तेल। पत्ररसार। मिलोइ। एसमव
नलतिकें। चूरणपांणीकेसा
थपीवेतो। कुष्टरोगजाइ॥ ८०॥
अथकुष्टरोगकोचूरण:॥ त्रिफ
लामजीवमिलोइ। कुटकीनिबू
निसाजुआंणइं। वचदारूहलद
विडंग। वासादेवदारूजआंणिहो
समपीसीचूरणकरइं। विधिसों
पीजेंपांणीसंगें। कुष्टरोगजुमवल
नाजही। नासेएकंजुअंगें॥ ८१॥ अ
थ॥ त्रिफलामजीवमिलोइ। कु
टकीनिबूरसनिसोतलेणं। वच

दासहलनऽ। वायविडंगजवासो॥
देवदारुश्रांणे। बरोबरी पीसीके
चूरणकरै। एविधिपूर्वकलीजे
पांणीमें। कोढ़रोगप्रबलनासे॥
नासेकंडुषाजरक्तविकारजा
॥ ए२॥ अथमंजीष्ठादिकाथवा
तरक्तकोदोहरा॥ मंजिष्टात्रिफ
लाकटु। रजनिनिंबगिलोइ। देव
दारुवचपीसाकें। काथजूको
जेंसोय। ए२ अर्ध। मंजिठत्रिफला
कटुकीनिसोतनिबगिलोय। दे
वदारुवचपीसीनें। काथकीजें

१२

इतोअतिदीर्घायुहोइ। सिंहजंघा
व्याघ्रजंघा। धनकीर्त्तिप्रदायका
।रोमजंघाचयुःखाय। दारिद्रस्या।
परिक्षिती॥३९॥ सिंहसमान
जांघहोइ। तेधननेंकीर्त्तिनइं।
आपें। जांघेंघणारोमहोइ। तोदा
रिद्रनेंराषे॥ अर्थ॥ मृगालसम
जंघानां। लक्ष्मीतेषांनजायते॥
मीनजंघस्वयंलक्ष्मी। संप्राप्नोति
नसंशयः॥४०॥ सीयालसम
जांघहोवेजेहनि तेहनेंलक्ष्मी
नथावे मच्छसरीषिजांघजइतो

तेहनेंलक्ष्मीनोनिवासहोवे।
तेहमांसंदेहनही॥अर्थ॥स्थूल
जंघाचसूक्ष्माच।श्रियंलजंति
मानवा।नष्टजंघाचराजेव।निसं
नाम्पविवर्जिता॥६२॥जेहनें
जाडी।अथपातलीजांघहोइ॥
तेपुरुषलक्ष्मीवंतहोवे।अनेंउं
टनासरीषीहोइतो।दारिद्रीहो
इ॥अर्थ।काकजंघाचराजेव।
तेषांराज्यंविनिर्दिशेत्।जेहनी।
कागनासरीषीचीपडीजांघहोइ ११
तेराजाहोइ॥६३॥इतिजंघा

लक्षणं समाप्तं ॥ एकरोमो नरो रा
जा । द्विरोमो धनवान् भवेत् । त्रिरो
मो पंडितः प्रोक्तो । बहुरोमा दरिद्र
ता ॥ ४३ ॥ जे पुरुषनें एक रोम हो
इ ते राजा होइ । जेहनै बे रोम होइ
ते धनवंत होइ । त्रिणि रोम होइ ते ।
पंडित होइ । जेहनें अति घणा रोम
होइ ते । दरिद्री होइ ॥ अथ ॥ इति
रोमोद्गमपरीक्षा समाप्ता ॥ हंसह
स्ति समां गत्या । पुरुषाश्च नराधिप
। वृषाश्चाषभ्रुसुकःनांच । गतिसो
गवतां भवेत् ॥ ४४ ॥ जेहनें हंसग

तिहस्तिगतिहोइ।तेपुरुषराजा
होइ।वृषनगतिवासगति।सूव
ड्गानिगतिचालेतेपुरुष।महाभो
गवंतहोइ॥अर्थः॥जलोर्मिसदृ
शायत्र।काकोलूकसमागति।उ
महीनविहिनाय्य।दुःखशोक
नयंकरी॥४५॥यथापांणीतणा
।कल्लोलस्यांमहोइ।जिसीकाक
घूक॥मरीषीगतिहोइ।तेपुरुष
द्रव्यहीनहोइ।अनेंसोकीहोइ॥
अर्थ।श्वानोष्ट्रमहिषाणंच।खरसू
करयोस्तथा।गतिर्येषांसमाख्यात।

१२

तेनरानागपवर्जिता ॥ ३६ ॥ जेन
रस्थांनकंटलिंसरवर। सूअरते
हनासरीषिगतिहोइ। तेपुरुष
नागपरहीतहोइ ॥ अर्थ ॥ इति
सामुद्रिकमध्यमपुरुषलक्ष
णं ॥ समाप्तं ॥ दक्षिणावर्त्तलिंगे
न। नरकंन्याप्रजायते। स्थूलक्ष
स्त्रो वि लिंगानां। दुरववंतेलवेन
र। अलिंसिचक्रलिंगेन। पुरुषा
सुरवसोगिन ॥ ३७ ॥ जेपूरुषनें
स्थूलजोडोलिंगहोइ। अथवा
कालोहोइ। तेसर्वदाडुरवीहोइ

अनेंअति लांबोहोइतो।अनेंवां
कोहोइतेअतिभोगीहोइ॥अ
र्थ॥एकेकंधारलिंगेन।नरोसव
तिपार्थिवां।द्विधारोधनवंतश्च।ब
ऊधारादरिद्रता॥४८॥जेहपु
रुषनइंएकधारामूत्रतणीहोइ
।तेपुरुषराजाहोइ।जेहनेंनिरो
धधाराबिपडइं।तेपुरुषधनतणे
भोगहोइ।जिहनेंघणीधाराहोइ
।तेपुरुषमहादरिद्रीहोइ॥अर्थ
॥मिनाग्रंधेनशुक्रेण।धनपुत्रव
तांसवेत्।हविग्रंधिनशुक्रेण।म।

वाद्यो जायते नरः ॥४९॥ इति सा
मुद्रिकशास्त्रे धारालक्षणं समाप्तं
॥ जेहपूरुषतणुं वीर्य। मीनसरीखुं
होइ। तेपुरुषधनवंत होइ। जेपुरु
षनेंहविंकहीइं होतन्म। दग्धकुइ
तेहनासरीखुं गंधहोइ। तेपुरुषव
त्रुःप्पादपणुं तोगवे। अनेंपूफसरी
खुंपरिमलहोइ। तेहनेंगो धनहो
इ। अर्थः॥ मधुगंधेन शुक्रेण। न
रस्त्रीजनवल्लभः। पद्मगंधेन नवे
न्द्रूपः। मदिरागंधेन पार्थीवः॥५०॥
जेहनुं वीर्य मधुसरीखुं। परिमलहो

इतेहस्त्रीपुरुषवल्लभहोइ।कम
लसरीषुंपरिमलहोइ।तेराजा
होइ॥अर्थः।लाक्षागंधेनसर्वे
यस्तु।मांसगंधेनतस्करः।व्यस
नीचववमागंधो।मधुगंधेनदुःखि
तः॥५२॥जेहनेंलाषसरीषोपरि
मलहोइ।तेनिर्धनहोइ।लोही
सरीषोहोइगंधतेपुरुषव्यसनी 14
होइ।मदसरीषोपरीमलहोइ।
तेअहंकारीहोइ॥अर्थः।कटु
गंधेनशुक्रेण।पुरुषोदुर्भगोभ २४
वेत्।क्षारगंधेनशुक्रेण।पुंसांदा

होइतेवारू।अनेंपातलीहोइते
दुखीनहोइ॥अर्थः॥सिंहव्या
घ्रसमोयेषा।कटिस्थंविनायका
।रक्तवानरतुल्याच।कटिर्येषांन
रोत्तमा॥ ६२॥ जेहनइंकटिसिं
ह।व्याघ्रनासरीषीहोइते।पुरुष
महाअसुरवीनहोइ॥अर्थः॥ई
तिसामुद्रिकेकटिलक्षणं॥मृ
गोदरनरोधन्यो।मयुरोदरमेवच
मंडूकोसदृशोयस्तु।सनरःपार्थि
वोभवेत्॥ ६३॥ जेहनेंउदरमृग
।अथवामयूर।अथवाडेडकोते

हनासरीषोहोइ। ते राजाहोइ॥
अर्थः॥ व्याघ्रोदरोगजयति। न
रः सिंहोदरोन वेत्। मंमकष्कोद
रोयस्तु। धनधांन्यसमृद्धवान्॥ ६
३॥ जेह्नेंवाघनासरीषोपेट हो
इ तेगजपतिहोइ॥ अर्थ॥ इति
उदरलक्षणं॥ वर्तुलानितिमर्गा
नीरा। नाभिपुंसांप्रशस्यते। उत्तान २
विरलानाभिः। सदादुःखप्रदाय
नी॥ ६४॥ जेह्नेंनाभिवाटली
। अथगंभीरतेपुरुषमाहाभाग्य
वंतहोइ। अथवावीरलीहोइते २७

रिद्रसाजन॥५२॥जेहनेंवीर्यप
रिमलकडूतुहोइ।तेमाहाअध
महोइ।जोषारोहोइतोदरिद्री।
होइ॥अर्थ।पर्याविसस्पशुक्रस्य
।नरःपुससमपार्थिवः।ग्रांमवर्ले
नशुक्रेण।देहनोगीसवेन्नर॥
५३जेहनेंहूधसरीषोवीर्यहोइ।
तेराजांनहोइ।अनेंकालोहोइ
तेनोगीहोइ॥अर्थ।समपाहोप
विहस्प।महिस्पृशातिमेहनं।स
चेवतुकरिकलोनित्यं।दरिद्रेण
वपीकितः॥५४॥मेहनकहीइ

लिंगसमिंपगिबेसतां।सुंइलोगे
तेपुरूषदरिद्रीहोइ॥अर्थः॥
समपादोपविष्टस्य।गुल्पास्पृश
तिमेहनं।इश्वरंतंविजानियात
।सुषिनंभोगवन्नरः॥५५॥जेह
नेंसमइपगेंबेसतां।लिंगजांघल
गिंजाइ।तेपुरूषरभ्जाहोइ॥अ
र्थः॥सिंहथ्याघ्रसमंयस्य।यस्सं
भवतिमेहनं।भोगवांस्तुसविज्ञे
यो।नधात्रेरगमहन॥५६॥जे
हनेंलिंगसिंहथ्याघ्रहस्तीनास
रीषुंहोइ।तेहपुरूषमहाभोगी।(

15

होइ॥ अर्थः॥ इति सामुद्रके लि
गाधिकारे प्रकरणं समाप्तं॥
प्रवालस्निग्धरक्तं च। शोणितं य
स्य देहिन। राजानं तं विजानिया
त्। देवतासम महाबला॥ ५७॥ जे
हनें रुधिर प्रवाला सरीषो होइ। ते
पुरुष महाधनवंत होइ॥ अर्थ
॥ पद्मपत्रसयंयस्य। देहे सवति
शोणितं। जायते बहुधा कन्या।
दुखितस्य सदा भवेत्॥ ५८॥ जे
हनें कमलनी पांषडी सरीषो लो
ही होइ तेहनें। कन्या घणी होइ।

अनेंवलीरात्रिदिवसि।महादु
खीतहोइ॥अर्थ॥गोमायुश्रा
हशांयस्य।महिषश्वांनतुल्ववे।स्व
नावेदुरिवनोनित्यं।धनहीनोन
शंसय॥५५॥जेहनेंनोहीसी
आलस्वांन।ऊंटसरीबुंपाडरुंहे।
इते।सदाअतीदुषीतहोइ॥अर्थ
इतिस्मामुद्रकेरुधिरलक्षणं॥
विस्तीर्णोकटिस्निग्धानि।भुञ्न
पुंसांप्रशस्यते।निर्मांसोस्तिकटी
वास्ति।तेनराडुरकनाजिनः॥५
७॥जेहनइकटिविस्तीर्णमोटि १६

पुरुषमहादुःखीतेहोइ॥अर्थ

॥इतिनाभिलक्षणं॥उन्नतोध
चितायेषां॥जघनस्निग्धपयोधरा
ःसनरोमैथुनःशूरो।भोगवंतः
स्वकर्मभिः॥६५॥जेहपुरुषनें
उंचाहढसकुमालपयोधरहोइ
।तेपुरुषकांमनेविषेगाढोहोइ।
।भोगवंतहोइ॥अर्थः॥उन्नतो
नेवस्तिःदग्धंच।शायलोचपयो
धरो।निर्मांसैश्चकुरूपश्च तेनरा
दुःखभाजिनः॥६६॥जेहनेंप
योधरनीचाकठिनमांसरहित

ऊरुपतेपुरुषमहादुःखितहोइ

॥ अर्थः ॥ इतिस्तनलक्षणं ॥

विस्तीर्णंहृदयंयस्य मांसलोप

चितंसुखं। ज्ञातांयुक्तंविजानीया

त। बज्रनोज्यंमहाधनं ॥ ६७ ॥ जे

हनोहृदयपहुलोहोइ। मांसेकरी

बउलहोइ। तेहपुरुषनोवर्ष१००

। प्रमाणआयुषुंहोइ। तेधनवंतरा

जाहोइ। अर्थ ॥ इतिहृदयलक्ष 18

णं ॥ सिंहपृष्टोनवेरोकस्तु। धनस्त

स्यविनिर्दिशेत। कूर्मपृष्टोनवे १८

राजा। धनसोज्ञागपनोजिनः। ६८

जेहनेंसिंहनासरीषीपूंविहोइ।ते
धनवंतहोइ।काछबासरीषीपूं।
विहोइतेमहाधन।इषवीतणोरा
जाहोइ॥अर्थः॥इतिपृष्टिलक्ष
णंसमाप्तं॥प्रलंबबाहुविज्ञेयो
नरःसर्वगुणान्वितः।ह्रस्वबाहु
र्भवेद्दासो।परकर्मकरःस्मृतः॥
टबा॥जेहनेंबाहुलांबीहोवे।ते
गुणवंतहोइ।जेहनीबाहुटूंकी
होइतेदासहोइ॥अर्थः॥इतिबा
हुलक्षणं॥यस्यमीनसमारेखा
कर्मसिद्धिश्चजायते धनाढ्यस्तुस

विज्ञेयो। बजपुत्रो नसंशयः॥७
०॥ जेहनइं हाथें मच्छ तणे आका
रइं रेषा होइ तेपुरुषनें। कार्यत
णी सिद्धि होवइं। तेपुरुष महाधन
वंत होवे। अनेंवली पुत्र तणी प्रा
प्ति होइ॥ अर्थः॥ तुलायामन्मषं
वज्रं करमाधनुदृश्यते। वाणि सं 19
दृश्यते तत्र। पुरुषस्पनश्लंसयः॥
७१॥ जेहनें हाथि तुला। अथवाव
ज्र होइ तेहनें। वांणिज्य तणो लाभ
होइ॥ अर्थः॥ पद्मवायदिवासं २०
खं कोष्टागारं चदृश्यते। नरस्पका

रयेयस्य। इश्वरस्यसनुच्यते॥१२

॥ जेहनेहाथेंपद्मकमलहोइ॥

रूवाआवासहोइ।अथपुरुषाका

रहोइते।पुरुषइश्वरहोइ॥अर्थ

॥ चंद्राकारोध्वजाकारो।रवड्गाका

रंचदृश्यते।सर्वविद्याप्रधानेन।

बुधिवान्सलवेन्नरः॥१३॥जे

हनेहाथेंचक्राकार।ध्वजाकारष

ड्गाकारहोइ।तेपुरुषअतिविद्या

वंतहोइं।बुधिवंतहोइ।अर्थ।

शूलनपांणियस्यनरः।सुधर्मस्तुर

ते सवेत्। यज्ञधर्मंचदानंच। देवगु

रुसपूजिक॥७४॥जेहनेंहाथें
अंकुशहोइ।तोरणबाणरथछ
त्र।एतलाहाथमांहिंदीसइं।ते
राजामहाभाग्यवंतहोइ॥अर्थ
॥अंकुशकुंडलनेंछत्रं।तस्य
पांणीतलेनवेतु।तस्यराज्यंवि
निर्दिष्टं।सामुद्रकवचनंयथा
॥७५॥जेहनेंहाथेंअंकुश।कुं
डलचक्रनेंपुरुष।राज्यभोगवे 20
॥अर्थ॥हस्तौवाअथवाशंकि
।करमध्येतुदृश्यते।असापंतंवि २०
जानीयात्।धनवंतंमहाधिपः

॥७८॥ जेहनेंहाथेंरुकदीसे॥

तेपुरुषमहाप्रधानवंतहोइ॥म

हाबुद्धिवंतहोइ॥समुद्रदेवना

तणोजिसोवचनप्रधानहोइ

॥तिश्चेंएवातकहीवी॥ अर्थः॥

मस्यापांगोलतलेरेषा॥कनिष्टामू

लसंस्थिता॥ऊर्ध्वयातित्रदेशंच

॥शतायुस नवेन्नरः॥७७॥जे

हनेंटांगुलीनीरेखा॥ऊर्ध्वऊपर

रीप्रदेशनीकहीं॥अंगुष्टापूवि

नीतेहाथिजायत्तवर्ष१००॥आ

यूहोइ॥ अर्थः॥ हिलिव्याधनरे

षाच।तृतियाकुलवृद्धिनी।यदि
पूर्णतदापूर्णा।पूर्णछिन्नासुछे
दनी।।७८।।बीजीरेषाधननीजा
णवी।त्रीजीरेषाकुलवृद्धिनी।जो
त्रूटीकहोइतो।त्रूटीककहवी।
त्रूटीकनहोइतोवृद्धिहोइ।।अथ
त्यकोईमणिबंधायी।रेषाचोत्तर
गामिनी।सुवर्णरत्नराज्यंच।श्रीदो 21
चकांचनाश्राय।।७९।।जेहनइ
हाथिमणिबंधथिकीरेषा।आघी
आवीहोइतेराजाहोइ।अथआ २२
ऊघाउहोइ।।अथ।अंगुष्टस्या।

वाकोलेपकरि। कठिन हि जीरारे

लि॥ २७ अर्थः॥ सुंवि नारंगीकी

नें। चोषा नापांणी सुं मिलावे। कंठे

तिसकों लेपकरे। कठिनगंडमा

लाजावे॥ २७ गंडमालाः॥ पीपर

अरु कचनारफूलि। टफला समक

री वांण। पीसपी वोजललतसों ना

सु अजीरणजांण॥ २८ अर्थः॥ पी

परकचनारफूलि। त्रिफला बरो

बरमेलनां। पीसीनें उष्णपांणी सुं

पीवेतो। अजीरणनोनासपावे॥ २१

२८॥ अथमुषरोगप्रतिकारः॥ त

थानहिहोइ ॥२४॥ अर्थः ॥ कांसानी
थालिमां घीपांणीसुं सोवार धोवे
लेपकरे पगनेतलीये तो दाघजल
नमिटे ॥२५॥ अथकफकोचूरण
दोहरा: ॥ नारंगिपीपरमिरिच सुंठि
कटाइपाय पीसीपीजेजलतमसुं
कफषांसीजुपराइ ॥२६॥ अर्थ ॥ ना
रंगिपीपरमिरच सुंठकटुइरीमाणी
फल पीसीनेगुंनापांणीसुंपीवेतो
कफनीषांसीजाइ ॥२६॥ अथपांडु
मालाप्रतिकारः ॥ सुंठिनारंगीपी
सिके तंडुलजलमहिमेलि कंवसु

प्रियद्येते। ब्रूते नृपतिमुत्तमं। सेव
तर्जनीकां प्राप्ता। राज्यं साम्राज्य
मुत्तमं॥ ८०॥ जेहनें अंगुष्टथकी
रेषा तर्जनी। लगें जायतो राज्य
पांमें। अनेंते द्विजरेषा जयवंत सं
पूर्ण होइ तो। महालक्ष्मी पांमइ
॥ अर्थ॥ सेनापति धनेश्चात्वं। मध्य
मांगनयातथा। अनामिकां पुन
: श्रेष्ठी। धनवान्सन्नवेन्नरः॥ ८
१॥ जेहनें मणिबंधथकी रेषा अ
नांमिका लगें जाइ। त्रीजी आंगु
लीहोइ। तेधनवंतराजा होइ॥

॥ सुखिनं सुसगंधापि । अथ होमकनिष्टिका । स करोति यदा नेव । यहि छिन्नासुवर्लगा ॥ ८२
जेह्नें चिटांगुली लगइ अंगुष्ठमूलनी रेखा होइ ते सुखी होइ जो खांडि रेषा न होइ तो वारु । अर्थः
कनिष्टामूलरेखायां । मणिजीवितरेषयो । तावंतामहिलास्तस्या
। स्त्रियस्तावनिताप्रिया ॥ ८३ ॥
चिटांगूलिमूलरेषा होइ । ते तली कलत्र जांणवी ॥ अर्थः । नर्बरेषां करोजेन । रेषा त्रयांगुलेलशा । ना

22

नाभोगसुखवीसेना। समुद्रवचनं
यथा॥ ८४॥ जेहनेंदाथेंनउर्द्धरेख २
त्रिणिआंगुलीहोइ। नानाविधि
भोगसुखधनवंतहोइ॥ अर्थः
इतिकरलक्षणंसंपूर्णं:॥ शिवा
तिवर्द्धलास्य। पूर्णेंद्रुसमास
वेत। पार्थिवसुखविज्ञेयः। धन
वानधनसंकुलः॥ ८५। जेहनइं
कोटवाटलीहोइ। अथवापूर्ण
इंदुसरीषीहोइ। तेराज्यलक्ष्मी
सहीतहोइ॥ अर्थः दीर्घग्रीवाशि
खीग्रीवा। बकग्रीवान्नथापुनः।

।शुकग्रीवाचसंस्थाच।तेसर्वेपरि
वर्जिता।।८६।कोटलोंबीहोइ
।मोरबकासूडा।काकएतलो।
नीपरिंकोटहोइतेविरुई।।अथ
कोटलक्षणं।।वृषस्कंध।गजस्कं
ध।कदलीस्तंभमेवच।तेसर्वेपा
र्थिवज्ञेया।महाभोगमहाधनी।८
७।।जेहनीषांधसांड।हस्तीकेलि
स्तंभसरिषीहोइते।राजाहोइ।सू
डांधनभोगवइं।अथ।।स्कंध
लक्षणं।।चंद्रबिंबोपमंवक्त्रं। २३
धर्मशीलंसदाभवेत्।मगामूषक

वक्राच। नेनराना ग्पवर्जिता।८
८।। जेहनुंचंद्रमानासरीषोमुष
होइ। तेधर्मवंतहोइ। हरिण क्रं
दरनासरीषोमुखहोइ। तेपापी
होइ।। श्लोक करालवक्रा विरूपो
।धर्महीना अकीर्तिना। हयोवक्रा
नरायेतु। दुःखदारिद्रभोगिनः
।।८९।। जेहनइविकरालविरू
पमुखहोइते। धनहीनहोइ। घो
डानाअरिषोमुषहोइते। दरिद्री
होइ।। इतिमुषलक्षणं।। यस्य
गात्रोहिसंपूर्णो। पद्मपत्रसमप्र।

त्तौ। जोगवंतनरश्चैव। सर्वविद्या
धरस्मृतः॥ ८०॥ जेहनइंगालिं
कमलसारीषीकांतिहोइ। तेस
र्वत्रविद्याजोगपांमइ। अथ। सिं
हव्याघ्रगजेंद्राणां। कपोलौसद्द
सौयदि। रुषिलोगीसवेश्मौषि। ब
हुपुत्रस्वजायते॥ ८१॥ जेहना
गालसिंहव्याघ्रगजेंद्रसरीषाहो
इ। बहुपुत्रहोइ। अथ। गालल
क्षणं॥ नक्राधरो नृपतिस्यात्। च
क्रोष्ठोसचदुखितः। स्थूलास्यांच २५
समास्यांच। नराश्चतांतदुखिनः॥

तस्त्रीपुरुषलोगकांक्षीहोइ। अ
र्थः॥ मध्यमायास्तुदीर्घाया। ना
र्याहानिर्विनिर्दिशेत्। अनामि
कायांतुदीर्घायां। विद्यालोगीस
वेन्नरः॥ ३१॥ मध्यमानीआंगुली
लांबीहोइ। तो नार्याहानिकरइ
। अनामिका जो लांबीहोइ तो। वि
द्याअनें लोगी। लीलावंतहोइ। अ
र्थः॥ साचक्तच्चालवेद्यस्य। तंवि
द्यात्पारदारकं। यस्यप्रदेसनीस्थू
ला। तज्ञेश्चैवकनिष्टिका॥ ३२॥
अनामिकाछोटीहोइतो तेपुरु

षस्त्रीगमननकरै। जोजाडीहोइतो

। कनिष्टपुरुषषकी। स्त्रीगमनन।

करइं॥ अर्थः॥ असंगतानिक्तस्था

नि। अंगुलीविस्नुमानवा। अंगुल्यापा

र्धिवाज्ञेया: सामुद्रक वचनंयथा

॥ २३॥ जेहनइ आंगुलीटूंकीहो

इ अनेमीलिहोइ। तोराजापणो।

होवे॥ अर्थ॥ इतिसामुद्रीकमा

के पादांगुली लक्षणं। समाप्तं।

नखैश्वतैश्वविक्रांतै। तेनराडु:ख

नागिन। रुक्षीताक्रनखाज्ञेया॥

कांमभोगविवर्जिता:॥ २४॥ जेह 25

॥ ५०

नोलेक्षकै । दंशानेदुःखजीविन
॥ टबा ॥ जेहनादांतहस्तीनासरी
षाहोइ । अघमोटा । अघविरला
रूक्षहोइ । तेसदादुःखीनहोइ ।
अर्थ । द्वात्रिंशद्दशनोराजा । एक
त्रिंसद्भोगवान् । त्रिंशत्दशनो
नीरोदुखं । दुखःमुख्यश्चलोगिनः
॥ टबा ॥ जेहनइ ३२ दांतहोइते
राजाहोइ । एकत्रीसदांतहोइते 25
। भोगवंतहोइ । ३० दांतहोइते
दुखिंसुखभोगवइ ॥ इतिदांत २५
लक्षणं ॥ रूक्षजिह्वासवेदास

६३ जेहनाहोठरातातोहोइ।तेगाङ्क
रनागपवंतहोइ।अनेवांकाजाड
होइ।तेदुखीतेहोइ॥इतिहोठ
लक्षणं॥कुंदपुष्पप्रतीकास
दंतैनृपतयःस्मृता।रक्षवानूरदं
ताश्च।निर्मांसरूक्षाक्षपादिता॥६
४॥जेहनादांतकुंदनाफूलनीप
रिंहोइ।प्रकाशकरइ।तेराजाहो
इ।अनेराक्षसवानर।नाशरीषा
होवेतो।सदाक्षुधातिरसइपीडायै
॥अर्थ।हस्तीदंतामहादंता।नां
स्तदंतागुणान्विताः।करालैर्वि

नेंनरखश्वेत अनें वांकाहोइ।तेपु
रुषसदादुखीहोइ।कांमनोगन
नहे॥अर्थ॥ विक्रांतौस्फटिकैः
स्थूलै।नंखैर्दारिद्रनोगिनः।माहा
पापानिकुर्वंति।पुरुषाद्दरीतिर्नं
खे॥३५॥ जेहनइंनषपांडराजा
डाहोइ।तेपुरुषअतिदरिद्रीहोइ
।अनेंजेहनानषनीलाहोइ।तेपा
पीहोइ॥अर्थः॥ इंद्रगोपकरांश
कासैः।नखैर्नवतिपार्थिवः।ता
म्रैर्नखैस्तथैश्वर्यं।गच्छंत्याश्चैवमां
नवा॥३६॥ जेहनानषइंद्रधनुष

मरीषाहोइ। अथ तांबा मरीषाहो
इ ते राजा होइ॥ अर्थः॥ चत्ते नैश्च
न घैश्वर्यं पुहिते: ससगोसवेत्।
स्सि थै: रूपरिते स्त्रा मे। नखे सेव
तिभूमिप:॥ २७॥ वाटले नखे सो
नागी होइ। राते वो पडे राजा होइ।
इति सामुद्रिके हाथपग नख
लक्षणा:॥ धनिनस्तु तुरजंघा
राजानमृगजंघका। दीर्घायुस्थूल
जंघेति। ध्मायतेजायुगा मिन:॥ २
८॥ जेहनें घोडाना सरीषी जांघ हो
इ। ते पुरुष धनवंत होइ। जाडी हो 2६ २७

होइ।तेधनवंतहोइ।जेहनोराती
होइ।तेराजाबलवंतहोइ।अर्थ
पीततालुनरायेन्।सन्नवेद्यनरा
धिपः।सच्चभोगीनवेत्तस्प।समुद्भव
चनंऋष्या।।एन्।।जेहनोतालुपी
लोहोइ।तेधनवंतहोइ।भोगवंत
होइ।।अर्थ।।तालूलक्षणं।।हं
सस्वरोनराधन्यो।मेघगंभिरपार्थि
वः।भृगाणांचस्वरोयेस्तु।धनवंतो
महेश्वरः।।एन्।।जेहनेसादहंस
सरीषोहोइ।तेधनवंतहोइ।मेघ
नासरीषोहोइते।राजाहोइ।स

मरासरीषोहोइतेदासहोइ।तेसो
गवंतहोइ॥अर्थ॥क्रौंचस्वरानरा
येच।नागपवंतोनवेन्नराः।स्वरख
राकाकनाराये।तेनरापापका
रिण॥ए३॥जेहनेंकाकनास
रीषोस्वरहोइ।तेनिर्धनहोइ।ष
रक्रौंचपंखियासूत्र।एहना
सरीषोदुसादहोइ।तेहरवीतेहो
इ॥इतिश्वरलक्षणं॥पार्थिवा
श्चकनाशाश्च।दीर्घनाशाश्चसो 27
गिनः।क्षसनाशानराजेच।धर्म २९
शीलाश्चतेविदुः॥ए४॥जेहनइं

नाकसूडानासरीषुंहोइ।तेराजा
होइ।लांबाहोइतोभोगीहोइ।बी
टोहोइतोधर्मीहोइ॥अर्थ॥हस्ती
नाशासमाटेढ।पीननाशाश्चजे
नरा।स्थूलनाशाश्चयेमर्त्या।सर्वे
तेजनवल्लभा॥८५॥जेहनेंहा
थीयानासरीषुंनाकहोइ।तेहनें
पीलोहोइतेविडंनें।वल्लभनहोइ
।अर्थ।स्थूलनासानरायेतु:।निर्द्ध
नोसवतेनरा।एत्पतेनासिकाग्रो
का।समुद्रवल्लभंयथा॥८६॥जे
हनइंनाकजाडोहोइ।तेनिर्धन

होइ ॥ अर्थ येषांच जादीर्घाच ना
शिकामुखमध्यमाः । तेसर्वेडुखि
ताज्ञेया । धनवंतस्तवेन्नरः ॥ ८७
॥ जेहनुंनाकजीभणुंहोइ । तेमुख
सणीवलइतेविरउधन । उपार्ये
नही ॥ इतिनाशिकालक्षणं ॥ ।
मामुद्रीकोवाच । रक्ताक्षंधनवं
तंच । व्याघ्राक्षंश्चकोपमं । कुर्कटा
क्षंसदादक्षे । मृगाक्षंश्चनेत्रोचनं
॥ ८८ जेहनीचक्षुरक्तवर्णहोइ 28
। तेधनवंतहोइ । वाघनामरीषी २८
होइ । तेदुखीयाहोइ । हरिणना

सनरोदुःखभाजनः।सामलायां
चजिह्वायां।सभवेत्पापकारकं
॥८६॥जेहनइंजीभकालीहो
इतेनरदुःखभोगवे।सामलीहो
इतेपापीहोइ॥अर्थः॥स्थूलजि
ह्वास्तथाक्रूरा।तेनराअनृतभाषि
णं।श्वेतजिह्वानराज्ञेय।शौचाचा
रविवर्जितः॥८७॥ जेहनइं
जीभजाडीहोइतेकूडाबोलोहोइ
।श्वेतजीभहोइतेअपवित्रहोइ
।अर्थः।पद्मपत्रसमानस्तु।विद्या
लक्ष्मीमवाप्नुयात्॥८८॥जेहने

कमलसमानजीलहोइ। अथरा
तीहोइ। तेपुरुषमिष्टआहारीहो
इ। अनेसुखीहोइ॥ ६९॥ इतिजी
कालक्षणं॥ रक्ततालुनरायेत्तु
। नक्रांतिकुलनाशका। पद्मपत्र
समातालु। नपतिसनरोत्तवेत
॥ ७०॥ जेहनइंतालुकालोहो
इ तेकुलनाशकरे कमलसरीषो
होइतेराजाहोइ॥ अर्थः। श्वेतता
लूनरायेत्त। धनलोक्षानशंसयः २५
रक्ततालूलवदस्तु। सबलानप २६
तिर्नवेत॥ ७१॥ जेहनेंश्वेततालु

मरीषीहोइते। थ्वललक्षणवं

तहोइ। अर्थ॥ बिडालहंसनेत्र १

च। भवंतिपुरुषाधमा। मयूरान

कुला क्षीच। सर्वेतेमध्यमास्मृता

।९९। जेहनेंआंषिबिलाडास

रीषीहोइ। तेमध्यमजांणवी। हं

समयूरनोलनासरीषी। तेमध्यम

॥अर्थ॥ चक्रूललकणं॥ ललाटे

नार्द्धचंद्रेण। भवंतिप्रथ्यविपती

।विपुलेनललाटेनं। विद्याढ्यो

भवतेनरः॥१००॥ जेहनेंलला

टिअर्द्धचंद्रमासरीषोहोइ। तेरा

आहोइ।पऊलोहोइतेविद्यावं
5 तहोइ॥अर्थ॥अल्पोनतुललला
टेन।अल्पायूजीयतेनरः।जन्हेत
नललाटेन।धनाढ्योभवतेनरः
॥१॥जेहनेंथोभुंनिलाफहोइते
थ्योभुंजीवे।तंथुंहोइतेधनवंत
होइ।अर्थ।विषमेनललाटेन
दुखिताजर्जरानराः।परकरम
तीनित्यं।प्राप्यतेवधबंधनं॥२
जेहनुंविषमनिलाभहोइ।तेस 29
दादुखीउहोइ।घरिरकांमकरे २८
।बंधनपांमे॥अर्थ॥त्रिशूलंकल

ग्रं चापी । ललाटे यस्य हृद्रूपते । ईश्व
रं तं विजानीयात् । प्रमदाजनव
ल्लभः ॥ ३ ॥ जेहनें निलाडि त्रिशूल
अथवा वज्र होइ ते । राजा होइ ।
स्त्रीनें वल्लभ न होइ ॥ अर्थः ॥ पंच
त्रिंशत माहुः हं । अशीति चतुर्वि
ंशत्या । नवंति त्रि(ति)षष्टानि । द्वासं २
विंशति द्वयं तथा ॥ ४ ॥ जेहनें
निलाटें पंच रेषा होइ । ते वर्ष सो
१५५ जीवे । जो रेषा च्यार होइ ते
। ८५ । वरस जीवे । जो रेषा त्रण होइ
तो वरष । ६५ । जीवे । जो रेषा बि हो

इतोवर्ष७० आयु। अर्थ॥ एकरे
खाललाटेन। विंशतिपरिकिर्ति
ता। अरेखेनललाटेन। अल्पायु
र्जायतेनरः॥५॥ जेहनइललाटं
रेरेखाहोइ। तेवर्ष२० आयु। ज
इकिमरेखानहुइतो। आयुप्रमा
5 णथोडो॥ इतिललाटलक्षणं
कटिनेस्फकटिनेरूक्षे। स्थूले
स्यात्तस्करोभवेत्। दुःखितपुरु
षोज्ञेयो। क्षुधावपरपीडित॥६॥ ३०
जेहनेकेडफाटाहोइ तेदुखीआ २०
होइ। अनेलूषाहोइते। वांकाजा

श्चतश्चैवच। युवतैपद्मवर्णैश्च।
पुत्रवंतस्त्रियःस्मृतः॥२५॥जे
हनुंपगक्रेचोहोइते।जाडोहो
इतेस्त्रीबेटाजणे॥अर्थ॥चक्रं
पद्मध्वजंछत्रं।स्वस्तिकवर्द्धमानं
त।यस्यपादेतलेदृश्यं।ज्ञेयास्ते
राजजोषिता॥२६॥जेहनइपगि
चक्रपद्मध्वजछत्र।साथीउतेरा
यनीकलत्रहोइ॥अर्थ॥यस्यपा
दतलेरेषा।तर्जनैसुषकास्पते
लसतेशीघ्रमर्त्तारं।प्रियनत्तीरि
योषितः॥२७॥जेहस्त्रीनइपगि

तर्जनीपहिलीरेषाहोइ।तेसती
रपहिलोवेगोपांमइ।अनेंसत्री
रनेंवन्नसहोइ॥अर्थ।यस्पन
हृरूपतेसूमि।आंगुलीचकनिष्ठि
का।नत्तोरंप्रथमंहत्वा द्विति
येश्चप्रतिष्ठितं॥२८॥जेहस्त्री
नीपगनीचिटीआंगुली।लूंइन
लागे।तेपहिलो।नत्तारनेंमारइ
वलीबीजोकरइं॥अर्थ।यस्या
स्वनांमिकाक्तस्वा।तांविदुःक
लहप्रिया।नूमीर्नहरूपतेयस्प २२
मोरव्यादत्तेपतिद्वया॥२९॥जे

हस्त्रीनापगानीचोथीआंगुलीटूं।कडीहोइतेकलत्र।कलहप्रियहोइ।जोलूंइनलागइंतोबिऊंनतारिनेंषाइ॥अर्थ आंगुलीचविलिक्रम्य।यस्यापादप्रदेशिनी।कुमारीरमतेजारं।यौवनेचैवकाकथा॥२०॥जेहनीपगनीआंगुलीप्रदेशिनीकहीइं।पहिलीविरलीलांबीहोइतेजारसुंरमें।अर्थ।उत्पन्नतपापिकुःशीला।महापापिदरिद्रता।दीर्घपापिपरिक्षिष्टा।समपापिसरोगा।

सना ॥ २१ ॥ जेहनें स्त्रीना पगनी पा
ह्नी ऊंची होइ तेदुः । खी न होइ
मोटी पांह्नी होइ तो दरिद्रणी हो
इ । लांबी पांह्नी होइ तो । सदा
रवद पांमे । जो सम होइ तो वाह्न
॥ अर्थ ॥ अंगूष्टाम हिषा कारे । बंध
नक लहष्मीय । निगूढ गुल्फो या
नारी । सा नारी सुखमेधते ॥ २२ ॥
जेह स्त्रीना अंगूष्टा महिष सरी
षा होइ । ते कलह कारणी होइ
॥ टी ॥ इति पादांगुली लक्षणं ॥ पी २४
नस्लनो घनसनिग्धो । छिरोरोमं

34

विवर्जितो। हस्तिनाश्चोचजंघेव

।तस्यापत्नीलतेतुसुखं॥२३॥

जेहस्त्रीनास्तनमोटाहोइ।क

ठिनसुकमालहोइ।त्रिरोम

नऊवइ।हस्तीनानाकशरीषो

जांघहोइतेसुखपांमइ।अर्थ

रोमैकनकवर्णैश्च।नाभौचत्रि

वलीधृता।नरेंद्रस्यचसाभार्या

।भवतिइहनसंसयः॥२४॥जे

हस्त्रीनारोमकनक।सूवर्णसरी

षाहोइ।नाभिंत्रिवलीरेखाहोइ

तेराजपत्नीहोइ।अर्थ।कूर्मष्ट

हं लग्नं यस्या। जन्मलग्ने स्निग्धसुशो
भनं। धनधान्यवती सा तु। पुनमा
नप्रसूयते ॥ २५॥ जेहनी योनि
का बबानी परिं होइ। अनें लगा
रे कका लइ वलें होइ। अनें सु
हाली होइ। ते धनवती पुत्रवती
होइ ॥ अर्थ॥ निर्मांसे च दीर्घा च
। लग्नश्च स्कंधरायुतं। दारिद्र
दुःखमाप्नोति। दोर्भाग्यं च विनि
र्दिशेत् ॥ २६॥ जेह स्त्रीनी योनि
लांबी होइ। अथ निर्मांस होइ। २५
अथ स्थूकी होइ। काली होइ ते

दरिद्रणीहोइ॥ अर्थ तन्नतैर्दक्षि
णेःपार्श्वैःस्त्रियपुत्रप्रदायनी।
वामोन्नतान्नगायाच। कन्यका
यांप्रसूयत॥ २७॥ जेहस्त्रीनीयो
निडावेपासइंऊंचीहोइ। तेहनें
पुत्रघणाहोइ। जिमणेपासेंऊंची
होइ तेघणीपुत्रीकाजणे॥ अर्थ
आवर्त्तसुन्नवेतयस्या। लगोस्पो
परिमस्तके। चारे विंबर्द्धतेपुत्रो
धनधान्यसमन्वितः॥ २८॥ जेह
स्त्रीनइंलगनेंमांथे। आवर्त्तहो
इतोधनवंतहोइ॥ अर्थ क्रमेण

षंगजदष्टं । समरोमात्मनाशिका
। विस्तीर्णपद्मपत्रस्य । षडेतेसुल
माजगाः ॥ २१ ॥ एवंवांनांवास्
जांणिवां । काविवानीपूंवि । अ
षहस्तीनाकांनसरीषी । समांनरो
महोइ । अल्पनाकहोइ । कमलप
त्रसमांनिपिकुलीयोनिहोइते
वारू । अर्थ खरोसरवररोमश्च ।
श्मश्रुदीर्घवनाशिका । संकटोवि
रलाश्चेति । षडेतेखगामध्यमा । २
० । जेहनइस्वरनाआरषुंपेटहो २६
इ । कठोररोमहोइ । मूकीनगलां

36

बोनाकहोइ।अथसांकणी।अथ
वीरलीहोइ।योनिमध्यमजांण
वी॥ ठः॥ जगनलक्षणं॥ गंनी
रनालियानारि।सानारीसुखमे
धने।समांसाचस्निग्धाच।साना
रीवसुशोनना॥ ३१॥ जेहस्त्री
नीनालिगंभीरहोइ।समांसमल
मांसयुक्तहोइ।सुंआलीहोइ
नेसुखपांमे॥ ठः॥ नालिलक्ष
णं॥ स्तनौचसहढौयस्या।पीनो
न्नतयुगस्तनौ।समांसलौचस्नि
गधौच।साप्रियाशोलनास्मृता

॥३२ जेहनइस्त्रीस्तनसुदृढहो
इ।ऊंचामांससंयुक्तहोइ।तेस्त्री
सुखपांमइ॥अर्थ स्तनोन्निथ।
लोयास्त्रीणं।लघुविरलोचद्द
रूपते।निर्मांसेश्वनतेजेश्व।सा
श्रियाचनस्त्रीलना॥३३।जेहस्त्री 37
नास्तननाक्ताऊंवे।विरलाकृइ
।निर्मांसिहोइ।निस्नेहजेहोइ
तेस्त्रीसुखनपांमइ॥छ॥इ
तिस्तनलक्षणं॥रक्तजिह्वाउ
यानारी।सासर्वत्सुखभाजिनी २७
॥३४॥जेहस्त्रीनेंएतीजीनहोइ

होइ। जेहनोकालोनालुंहोइ
तेदुखीणिहोइ। रातोनालुंहो
इतेराज्यपामें॥ ७ः॥ नालुल
क्षणं॥ दीर्घेणनासिकाग्रेण।
नारीसवतीकोपिनी। ऋस्वेनत्र 38
सवेद्दासी। परःकर्मकराःस्मृता
ः॥ ३७। जेहनइंनाकनुंअग्रलां
बोहोइं। तेरीसालीहोइ। नाक
छोटोहोइतोदासी॥ अर्थ॥ च 3
पिटानासिकायस्या। वैधव्यंसा
वगच्छति। अतिदीर्घेणातिवित्ती ३८
र्णा। सानारीसुखमेधते॥ ३८।

।तेसुखपांमइ।पुत्रजिणे।श्री
श्वेतयावजनेनूमत्तं मलिनाय
नुधनक्षयः।श्यामायांकन्नहोनि
त्यं।वंश्याछेदोविनिर्दिष्टोतु॥२५
॥जेहस्त्रीनीश्वेतजीभहोइतेस
गानेमारे।कालीजीभहोइतेध
नक्षयकरइ।वंसछेदकरइ॥
ब॥इतिजिव्हालक्षणं॥श्वेते
ननासुनादासी।दुखीनाक्ष
नासुना।हरितेनवरूक्षेण।र
क्तनासुसुमोजन॥२६॥जेह
स्त्रीनोनासुहश्वेतहोइते।दासी

जेहनुंचीपकुंनाकहोइते।वहि
लीरंडाहोइ।अतिलांबोहोइ।
अतिपऊलोऊवेते।स्त्रीनोसु
खपांमीयें॥७॥नाकलक्षणं
॥पिंगनेत्रासवेन्नारी।अघीया
माचमांमिनी।डुःसीलासाति
विज्ञेया।वैधव्यंजायतेपुनः।
॥१०॥जेहनीआंषिपिलीहोइं।
तेदुःखीलावहिलीरंडाइ॥८
॥इतिनेत्रलक्षणं॥यस्यात्री
णिप्रलंबानी।लीलाटसुंदरंक
टि।सापिमारय्यतेस्त्रिणिह।स्फस

रं देवरं पति ॥ ७७ ॥ जेहनें निला
ड लांबो होइ ते । सू सरो मरइ । अ
नइं पेट लांबो होइ ते देवर नइं
मारइ । कडि लांबि होइ ते । स्त्री
रनें मारइ ॥ अर्थ ॥ ललाट त्रिगु
णं यस्या । शिररोमं विवर्जिता नि
र्मलं सुसमं दीर्घे । आयुः सूक्षं ध
न प्रदा ॥ ७८ ॥ जेहनइं निलाड । ३९
आंगुल त्रिणि होइ । अनें शरीर
रोम नजइ । निर्मल देह होइ ते ।
वारू । अर्थ ॥ स्थूल केशा यपि पीच ३८
। दीर्घ केशा धन प्रदा । पुरुषैः क

पिलेः क्रूराः। स्कंधदेशेन ग्रोजना

॥४२॥ जेहस्त्रीनइ केश जाडाहो

इते भर्त्तारिनेंमारइ। लांबाहोइ

तोधनदियइं। कठोरअथविरला

केशते। अश्रुनहोइ। षांधालां

होइतो वारु॥ अर्थ॥ मृगाक्षी

मृगजंघाच। मृगग्रीवामृगोदरी

। अपिदासकुलेजाता। राजपत्नी

वभात्यवेत्॥४३॥ जेहनीहरि

णरासरीषीआं षिहोइ। अनेंमृग

नामरीषीजांघहोइ। कोटपेटह

रिणनासरिषुंहोइंतो। नेस्त्रीदा

सिनेघरेहोइतो। तेराजानीक

नत्रहोइ। अर्थ। हंसस्वरामेघव

र्णा। यानारिदीर्घलोचना। यस्या

गृहेसमायाबेनुः। तर्गृहंपुण्यन्ना

जनं॥ ७४॥ जेहनुंहंसनासरीषो

सादहोइ। अनेमेघनाआरीषोब

लीहोइ। अनेदीर्घलोचनहोइते

।पुण्यवंतपतिव्रताहोइ॥ अर्थ

ललाटेयस्यहश्यंते। स्त्रस्त्रंतिल

कमुत्तमं। मापुंचजनयेपुत्रान्

।धनधान्यसमाकुलान्॥ ७५॥

जेहस्त्रीनुनिलाडकान्नूंतिलक

५०

८०

होइतोपांचपुत्रजणे।घणधनहो
इ।अर्थ।हंसस्वरोमेघवर्णो।या
कन्यामगपिंगला।अष्टौसाजन
येत्तुपुत्रा।धनधान्यसमन्विता
।।४६।।जेहस्त्रीनेंहंसनासरीषो
सादहोइ।अनेंमेदनासरीषोदे
हनोवर्ण।अनेंमधुपिंगलाहोइ
तो।पुत्रआवजणइ।।अर्थ।हंस
स्वराःक्रौंचस्वराः।नाभिधूंको
किला।चक्रवाकस्वराचार्थ
।हेमधान्यानिवर्द्धनी।।४७।।ए
तलेप्रकारेंजली।जेहनोस्वरहं

सनासरीषोहोइ। अथक्रौंचनास
रीषो। अथभ्रमरनासरीषो। अथ
कोकिल। एहनासरीषोसादहो
इ तेधनधान्यसुवर्णघणुंपांमइं
। अर्था। आयतौश्रवणौयस्य: ।
सरूपाचैवनात्रिका। सुवौचं
द्रायुधाकारौ माकन्यासुरक्तो
गिनी। अर्थ। जेहनाकांनलांबा 41
होइं तेन्हृडो। भ्रमेवंद्रायुधस।
मान होइ तेसुरक्तोगवइं ॥ अ
र्थः। मंडूककुक्षियानारी। निग्रो ४१
धपरिमंडला। एकंजनयतेपुत्रं

सापिराजास विष्यति ।४९। जेह
नी ऊषिडेड कानाशरीषीहोइ ।
वटनीपरिमंडलनहोइ । तेपुत्रए
कजिणेतेराजाहोइ ।अर्थ। एकै
केनउरोमेण । जंघोचैवचवर्त्ते
लो । धनधान्यवलीकन्या । सर्व
सौख्यकरीस्मृता ॥५०॥ जेहनें
एकेकूंरोम । वाटलीजांघतेधन
वतीसुषकारणीहोइ ॥अर्थ
नीलोत्पलसुवर्णाना । पिंगनेत्रा
चलामिनी । सुवर्णरूप्यवर्णा ।
ज्यां । स्वामिनासादितिर्दिशेत् ।

।५२। जेहनेंकांतिकमलनीनाश्च
रीषीहोइ। सोनासरीषिकांति
पिंगलनेत्रा। तेस्वामिनीहोइ।
।आर्या। यास्वीपयोधरायांमे। अ
सितंतिलकंप्रिया। हस्तीकर्मे
चकंकेच। साकंन्यासुखदायि
नी।५३।। जेहनेस्तनेंकाकुतिल
कडावइपासेंहोइ। अथवाकांनिं
अथवाकिंवेंहोइतें। पुत्रजणइ
।आर्या। पादेप्रदेशानीयस्याः। अं
गुष्टंचविनिक्रमेत्। समारयंति
भर्त्तारं। जारंचरमतेसदा। ५३
५२
४२

जेहस्त्रीनीपगनी। आंगुलीअं
गूठोथकीलांबीहोइ। नेस्त्री
नत्तारनेंबाडी। जारसंगेंरमइं
। अर्थ। पादेषुमध्यमायस्या। स्त्रि
तिनसज्ञातेयदा। पुरुषोह्यवि
तिक्रम्य। तृतीयसहगम्यते॥ ५
३॥ जेहस्त्रीनीपगनीआंगुलीत्री
जीभुंइनलागे। तेबिऊनत्तारि
नेंमारीनें। त्रीजासंघातइंरमइ
सही॥ अर्थ। पादेस्यनायकाय
स्या। महीनस्पृशतेयदि। कुंत्री
लाद्रुसमाधैव। तांकन्यांपरिवर्य

येत्॥५५॥जेहस्त्रीनीत्रीजीआं।
गुलीत्तुंडनलागेतो।त्तुंफीहोइ
तेबांफिजो।अर्थ।आवर्त्तीस्त्र
तोयस्या।नासाकल्याणसा।ज
नी।बहूनूरमतेपुरुषानू।दुखि
तानूकुरुतेतुसा॥५६।जेहस्त्री
नीचापटीपृष्टिहोइतेस्त्री।घणं
सुंरमइं।अर्थ।यस्यरोमाणिजं 49
घायां।मुखंचविकृतीनवेत्।रो
मतिस्त्रिन्निरावर्त्तौ।ज्ञीघंसूयते
पति॥५७॥जेहनइजांघेरोममु ५२
खविरुयो।देहनारोमवांकडा

होइ।तेपहिलोतन्नारिनेंषाइ॥
अर्थ उरथंपिंडिकायांउ।वाराह
स्तररोमयो।अपिराजकुलेजा
ता।दासीत्वमुपगछति॥५८॥जे
ह नुं पिंड बाधीहोइ।गाडराना
ञारीषारोमहोइ।केतीनारइरा
यनइ।कुलिकपनीहोइतोतेदा
सीपणुंपांमइ॥अर्थ काकजंघाच
यानारी।वाराहरोमराकुसी।सा
धीतवजकल्याणी।पतिदुःखेन
मोहिता॥५९॥जेहनेंस्त्रीनेंका
कनाञारीषीजांघहोइ।जेहस्त्री

नेंसूअरनासरीषास्यांमहोइ।ते
सत्तरिनेंमोहिपाडीनेंमारइ।।अ
थ।जावतूबबुंदरीगंधा।मछगंधा
चयास्तवेतू।उग्रगंधाचयानारी
।तांकन्यांपरिवर्जयेत्।।६०।।जे
हनइबबूंदरीनासरीषीपरिमल
होइ।अत्रमछसरीषोपरिमलहो
इतेनत्तरिनइंमारे।।६१।।इति
सामुद्रिकेस्त्रीलक्षणं।।यस्या
उदरदयेनार्या।रिक्ता न स्तिल
कोनवेत्।लांछनंतवतिरस्का
कं।सानारिसोसनास्नवेतू।६२

५५

जेहनइ हीये तिल । अथ तिलक
। अथ लांछन होइ ते स्त्री सौख्य ।
पांमे । अर्थ । ललने हृत्तसंपन्नं । हृ
दये सवतिवर्जनं । पुत्रत्रयं प्रसू
तासा । नया कन्याचतुष्टयं ॥ ८
२ जेहनइं मदग्र तिल होइ । तोइ
बेटा ४ बेटी जिणे । अर्थ । स्तने वा
मे च स्त्रण्यासं । लांछनं तिलकोप
मं । स्त्रियं वैधव्यमाप्नोति । जायते
च सदुःखिता ॥ ९ ॥ जेह स्त्रीनें
डावे स्तन निकट लांछन होइ । अ
थ तिलक होइ । ते वहली रंडा हो

इ। अर्थ। मेषलांचंवहंतायस्या॥

नालिदेशेतुवर्ड्ला। सकन्यासव

तिकल्याणी। राजानृपतिमाप्नुया

त्॥ ८४ जेहस्त्रीनेंमेखलानाति

वाठुलीहोइ। तेराजानंनंनारिपा

मइ॥ ८४। अश्वत्थपत्रसंकाशं।

गुह्यंयस्याप्रजायते॥ सासर्वत्सु

लगानारी। यदिगूढोमणिर्नवेत्॥

॥८५। जेहनेंपिंपलनापांनसरी

षीयोनिहोइ। तेनंनारिनसुखदि

यइ। अर्थ। गुह्यांतेतिलकंयस्या ४५

रक्तकुंकमसंनिभं। अथवादक्षि

णनागो । अशास्तेमानिगद्यते । ८६
। जेहनइ गुह्यस्थानकिं रोमोतिल
। अथवाजिमणइपासइं । होइतेस्त्री
सुभगहोइ । अर्थ । यस्यापादेध्वजं
छत्रं । मूशलंअंकुशंतथा । अशा
स्तासालवेनारी । राजानंलभते
पतिं । । ८७ । जेहनेपगिअथध्वज
मूंसल छत्रगदा अंकुशहोइते
। स्त्रीपतिराजापांमइं । अर्थ । । ना
भीरवोलवेत्यस्य । जांघनपरा
वोपमं । ऊं ऊंमोदकसंकाशं । अ
शास्तामानिगद्यते । । ८८ । जेहनी

नासिहेठतिलांबनहोइ।तेश्रुन्न
जांणवी॥अर्थ धान्यगंधाचयाना
री।निंबगंधाचयालवेतू।वर्यनी
याप्रयत्नेन।यदिछेचिरजीवितं
।६९।जेस्त्रीनोपरिमलवेश्याण।
सरीषोहोइ।अथनिंबशरीषोहो
इ।तेवर्जवी।अर्थ।क्षीरगंधा
त्यजेत्कन्यां।तथैवकटुगंधिनी
।रक्तगंधात्यजेत्तूकन्या।नांकन्यां 56
परिवर्जयेत॥७०॥जेहस्त्रीनो
गंधसरीषोहोइ।अथकमूजेप ४६
रिमलहोइ।तेकन्यावर्जवी।अ

त्रविशालनानि। स्त्रीणांलक्षणमु
त्तमं।।७५।। जेहस्त्रीनइं अल्पस्वे
द अल्परोम। अल्पनिद्रा। अल्प
भोजन। नेत्रसरीरं। जिह्वामृगा(स्तै
क्षीच। यानारीमृगलोचना। कृ
शोदरीगजगतिः। स्त्रीणांमुत्तम
लक्षणं।।७६। जेहस्त्रीनीजीभ
रातीहुवे अनेंमृगलोचना। पे
टपातलोहोइ। तेउत्तम। अथ
। कृष्णजिह्वाचलंबोष्टी। पिंगाक्षी
घुर्घरस्वरा। लंबोष्टीकृष्णजंघा
च। दुष्टनेत्रहराकृसी।।७७। जे

हनेंकालीजीस।लांबाहोठपी
लीआंषिघोघरोसाद।लांबाबे
होठजांघकालि।तेकन्याराक्षसी
कहीइ॥ अर्थ यस्यास्त्रिरोमसौ
पादौ।रोमसौचपयोधरौ।विध
वालवतिसासीघ्रं।समुद्रवच
नंयथा॥१८॥जेहनइपगिरोम
स्तनिरोमहोइतेवहलीरंडाहो
इ॥ अर्थ अतिदीर्घाअतिह्रस्वा
अतिस्थूलाअतिकृसा।अति
गौरा।अतिकृष्णा।सास्त्रीअसु
खदायिनी॥१९॥जेहस्त्रीअति

ऊंचीअतिनीची।अतीजाडी।
अतिपातली।अतीगोरी।अती।
कालीहोइतेसुखनदीइं।अ
र्थअतिप्रचंडाअतिहृष्टसाषिणि
।विवादकर्त्तास्वयमेवचारणी
।कुशीलनीममगृहाप्रवेशानी
~॥नार्यस्त्यजेन्नुसायद्विपु
त्रपुत्रणी॥८०।जेस्त्रीनइंअति
।आरहडीरूडाबोली।शीलनी
सातेघरपेसतीहिंडइ।एहवी
बीजेहिंडे।एहवीहोइतेकेती
वार।१०पुत्रजणइ।तोइतेनपर

णवी।अर्थ पिंगाक्षी रूपगर्व्वा प
रपुरुषरता।श्याम ता लोष्ट जिह्वा
।।लंबोष्टी लंबदंता।प्रवर दृश्या
ना स्थूल जंघो र्ध्वकेसी।अक्षी स
मद्दष्टी पुरुषष्ट श्मश्रुदरा रोमसा
सर्वगात्रे।साकन्यावर्जनीया सु
।खधनरहीता निद्रशील प्रवीदि
शा।।८१ जेहनी पीली आंषि होइ
।रूआसरी षागाल होइ ते।स्त्री
परपुरुष सुं लंपटि होइ।काला
होठ जीनता लूठ।काजो लांबो ४८
होठ दांत।जांघ ऊपहरा केश।।

पंषीआंषीहोइ। पूंविमोटोपेट। स
घलेसरीररोमहोइ तेकन्यावर्ज
वी॥ अर्थः॥ इतिसामुद्रिके
स्त्रीणांलक्षणानिःसमाप्ता॥
पद्मनीकूलकेशाच। ऊर्द्धकेशा
चहस्तनी। चित्रणीदीर्घकेशाच
। अल्पकेशाचसंखनी॥ ८ ॥ ३ ॥ प
द्मनिनइसुंआला। भ्रमरआरी
षाकेशाहोइ। हस्तनीनेंकेशाक
नाहोइ। चित्रणीनइलांबाकेश
होइ। संखनीनइ घोडाकेशाहो
इ॥ अर्थ अंगस्तनोवपद्मन्या॥

हस्तनीस्तनचक्रवत्।दीर्घस्तं
नौचसंषन्या।चित्रणीचसमस्त
नी॥८३॥पद्मनीस्तनश्रींगानी
परिंवांकाहोइ।हस्तनीनास्तन
चांदआरिषाहोइ।शंखनीनास्त
नलांबाहोइ।चित्रणीनास्तन
समाहोइ॥अर्थ।पद्मनीदंत
श्रोल्लाच।दंतोन्नतोचहस्तनी।
शंखिनीदीर्घदंताच।समदंता
चचित्रणि॥८४॥पद्मनीनइदां
तवारूहोइ।हस्तनीनइदांत
ऊंचाहोइ।शंखिनीनादांतमो
५०

टाहोइ।चित्रणिनासमादंतहो
इ।अर्थ।पद्मनीपद्मगंधाच।मधु
गंधाचहस्तिनी।शंखनीक्षीरगं
धाच।मछगंधाश्चचित्रणि।८५
।।पद्मिनीनइकमलसरीषोगं
धहोइ।हस्तिनीनइंमदिराश्सरी
षोगंधहोइ।शंखनीनोक्षीरस
रीषोगंधऊइ।चित्रणीनइमछ
सरीषोगंधहोइ।अर्थ।हंसस्वर
स्यपद्मिन्यां।गूढश्वाष्टाचहस्तिनी
।रूक्षश्वाष्टाचसंषिण्यां।काकश्वा
ष्टाचचित्रणी।।८६।।पद्मिनीनो

सादहंसनाशरीषोहोइ।हस्त
नीनोस्वरगंभीरहोइ।शंखिनी
नोसादह्नुंमोहोइ।चित्रणीनो।
कागनासरीषोसादहोइ।।अर्थ
पंकजासनलयेनपद्मिनी।वे
णुदारित्तपदेनशंखिनी।स्कंध
पादयुगेनहस्तिनी।नागरेणर
मयंतिचित्रणि।।६७।।पंकजास
नपद्मिनीवल्लभ।वेणीशंखि
नीनेंवल्लभ।स्कंधपादहस्तिनी ५१
नइंवल्लभ।नागरासानचित्रिणी
नइंवल्लभ।।इतिमामुद्रिकप

॥ दोहा ॥ शिवसुतपदगणमुंस
दा रुद्धि सिद्धि नितदेइ रुमति
विनासनसुमतिकर मंगलसु
दितकरेइ ॥१॥ अर्थः ॥ शिव
केपुत्रगणेशजीनाचरणकमल
नेंनमस्कारकरेछइ दिनम
ग्रतेंदवेरुद्धिसिद्धिदिनम्प्रतें
रुबुद्धिविनासेचनिमति
करे मंगलीकदीनम्प्रतेंहोवे
॥२॥ अलषअमूरतिअकल
गति किनहूनपायोपार जो
रियुगलकरिकविकहै देवी

१

देहमतिसार ॥२॥ अर्थः ॥ न
गवानकीकरणी जेहनीमू
रतीनहीरूपनहीकेहीगति
है किणंपारपांम्योनही ब्र
ह्मा विष्णुमहेसरें गतिपारपां
मेनही एहवोचीदानंदस्वरू
पतेहनेंदोनुहाथजोडीनें न
मस्कारकरुं अनेंदेवीसरस
तीतेहनेंप्रणमुंबुबुद्धिपंडि
ताइनीआपे ॥२॥ वैद्यग्रंथ ५२
मबमथिकें रच्योजुभाषा
आंनि अरथदिपावुंप्रगट

करि । तेषधरोगनिदांन ॥ ३ ॥
अर्थ ॥ वैद्यकजेग्रंथसघला
इंढेषिनें । एवैद्यकग्रंथपरच्यो
। तेमेंनाषाकीधीछै । एमेंना
षासुगमअरथ । प्रगटकीधो
छइ । तेसदरोगानेंप्रगटकरुं
छुं ॥ ३ ॥ ममम तिअल्पेजूक
हतकुं कविमतिपरमअगा
ध सुगमचिकित्साप्रगटक
रि । छमहुसबैंअपराध ॥ ४ ॥
अर्थ ॥ माहरीजेबुधिअल्प
कहतांपोमीसीकछइ पं

२

फिलनीमतिमो टिकहतांवि
स्तीर्णछइ ध्योडिसीरोगीनी
परीक्षाकह्युं रोगिनोस्वरू
पञ्यमाटकइ तेजेपंडितजेस
र्वेमाहरो अपराधषमज्यो ॥४
॥श्री वैद्यमनोत्सवनामधरि दे
षिग्रंथसुप्रकास केसवदा
ससुतनैनसुष भाषाकियो
विलास ॥५॥ अर्थ ॥ प्रथम
एग्रंथनोनामवैद्यमनोत्सव
कह्योछे मोटोजेग्रंथ पदेषिनें ५३
प्रकाशकीधोछे कवीस्वरइं

केसवदासनोपुत्रनेनसुषती
णप्रकासकीधोछे।नाषामें
कीधोमहाविलास।सुषनोक
रणहार॥२॥प्रथमनस्यानछ
नकडुं।देषिग्रंथमतिसोइ।उ
निआमेंअनुनावही।जेसीमो
मतिहोइ॥६॥अर्थ॥पहीलां
नाडीनोविचारमूत्रलछनःवा
तःपितकफ।एहनोविचार
ग्रंथमतदेषीनेकडुंछुं।संसा
रमेंप्रगटकरेजेवैद्यकआवे
छे।जेमारीमतिहोइ॥६॥अथ

२

नाडीपरीक्षाः॥ करअंगुष्टके मूलही। देषऊनसा आकार। जानऊ सुषदुषजीयऊं। पंडितकरऊ बिचार॥७॥ अर्थ। कण्हाथनो अंगुठानो मूलनप कमीनें नसदेषीनें आकार जाणवो वात नाडी कफ नाडी पीत नाडी ३ ब्रुनती जांणवी सुषनो दुषनो जीवनो विचार कहवो जेकोइ पंडितकरजो विचार सुषदुषनो॥७॥ आदि पित्तफनिमध्यकफ अंतहिए

3

५४

54

नाषेदूनयानकरदे।रूषाषाइ
कटुकनिद्रिजागे।संध्यासमेंश्री
ततनुजागे॥२८ अर्थः॥उनाव।
नोनचाले।वाद्नकरे।अन्नकरे
।चित्तमेंषेदनकरे।चितमेंनयन
करे।नूषाषाय।कटूकनषाइ।
रात्रेंजागेनही।सांझसमेंशीतल
इनागे॥२८॥नवननकरेकसाइ
नासोइ।कीयप्रहारवायुअंग
होइ।वातपित्तकफपतिजांन।रा
जभासब्रह्मसुनऊसयांन॥२८॥
अर्थः॥न[illegible]णनकरे।कसालीव

स्तुनषाइ। सरीरनेंग्रहारनकरे

। वायुग्रकारसरीरमेंहोइ। वाय

पीत्तकफः एहमेंत्रतपतीहोइ। ग्र

जमासत्रहजानऊसयाने। एग्र

जमासकहीइं॥ २७ दोहरा॥ मृ

गशिरपोसमाघमें। भाद्रोंश्राव

णतास। फुनिग्राषाढपंडितक

हे। वायुराजषटमास॥ २८ ग्र

र्थ॥ मृगशिरपोसमाहमें। भाद्र

वोश्रावणमास। वलिग्राषाढमा

मएपंक्तिकहो। वायुराजाछमा

सनोकहे॥ २७॥ ग्रथवायुपित्त

कफलक्षणपरीक्षाचौपई ॥ मु
षकटुताव्याकुलनपरलाप । सुके
अधरस्वेदअरुताप । मूर्छादाघ
श्रीतपरमीत । लक्षणसुनकफपी
तकेमित्त ॥ १८ अर्थः ॥ मुषकटु
तारहे सरीरंव्याकुलताइ । अजं
परहे । होठसुके । पसीनोतपतर
हे । मूर्छाहोयदाहश्रीत । परवाह
एलक्षनपित्तकेमित्त ॥ १९ ॥ आ
लसषेहरषासीस्वास । मुषमीठा
जुनूषकानास । हीयानारीगलग्र
हरहे । कफकेलक्षणएतेकहे । २०

अर्थ॥आलसषेहरषांसीस्वास
मुषमीगोरहै।नूषकेनासहोइ
बातीनारीरहे।मलेषरषरीरहै
।एलबनएलेकफकेजांणीजें।
॥२२॥देहीपित्तनानूअतिजरे
आलसषेहरिवमनजुकरे।दे
हीसीतलनिद्रानास।रूषाअंग
बऊनऊइतास॥२३अर्थ नूष
हीनसरिरपीततानूअतिजरे।
आलसबांफि।सलेषम।वमनक
रे।देहिसीतलाइंनिद्राकोनास १९
होइ।बातीनारीरहै।मलेषरष

रहे। एलबनएतेकफकेजांणीजें
॥२१॥ भूखहीन.भूषफीकारहे। उ
ष्णप्रीतकफज्वररहे। नेंनमेंबि
योंक.है बधांनि। मारूतलबनएते
जांणि। २२ अर्थ॥ दूधानही। मुष
फीकारहे। गरमीसुंपीत: कफज्व
रहे। नेत्रमेंएलबनकविकहै।
वायुलबनजाणवो॥ २२॥ पित्त
कफवायुउपचार दोहरा॥ त्रि
य संगमअरूबीजणा। शीरसलि
लअस्नान। भोजनमधुरसुगंधला
के कोपपित्तहांनि॥ २३ अर्थ॥

६

स्त्रीनो संगम वायुनें लेवे। शीतल पांणी सूं स्नांन करे। मीठी वस्तुनो भोजन सुगंध वस्तु लेवे। एतलेको पनास। पित्तनास॥२३॥ अथ सा धारण लंघनं सोरठाः॥ पारिक सत्ना तिक्त कटु। तमोदक उपवास। व मन विरेचन स्वेद फनि। होइ इन यी कफ नास॥२४॥ अर्थ॥ स्वारक सायलीतीषो कडुवे। गरम पांणी पी वे व्रत धमुष करतो रहे। वमन क रतो रहे। विरेचन लेतो रहे। पराह मकर तो रहे। एतले प्रकारें मांथे क ८०

फनासे ॥२४॥ नसोदकअंतनतस्य
विधि। मर्दनतेलसरीर। सुरापांन
सेकेदहन। इनथेंजाइसमीर॥२
५॥ अर्थ। उष्नपांणीपीवेव्रतकरता
रहे। उनीवस्त्रसुश्रमकरे। सरीर
नेविषेतेलमर्दनकरे। मदीरापां
नकरे औषधि। अगनीसुंतापे। शीत
लाइजाइ॥२५॥ अथसाध्यल
क्षन:॥ होइत्रीषाजसुहीन। कर
पदनानिजूतमही। मडुरसना
परवीन। लक्षनलखनजाकेकहे
॥२६॥ अर्थ॥ त्रषाहीननहोइ। जा

१०

कोकरुपगनाहिजोतमरहे।।
कोमलनाहूहेजीनरहे।एल
बनश्रुनकह्या।।२६।चौपई।इंद्री
अंगरहेचेतन्न।सुषनिजग्रावें।
सुप्रसंनि।श्रुनचितवनसुनेंव
चकहें।स्वासगंधसबकेगुणलहे
।२७।इंद्रीअंगचेतनरहे।निजसु
षंआवेचीतघुमालरहे।श्रुनचि
नरहे।वातनेसुणेबातनेग्राहीक
हे।श्वासगंधश्वादगुणअवगुण
जांणे।।२७।।विनश्रप्वेदज्वकजा
केकहें।मर[illegible] ६१

गहे। करऊंदिकिम्रातःकोजांनि
सोनरजीवकद्योवर्षानि॥२८ग्र
थी। प्रश्वेदरहिततपतिरहे। जोबो
स्वासहीनस्वरकफहोइ। इनकी
चिकीछासमकफकेकरे। तेनर।
जीवेआयुम्रानसजांणेवाम्रागो
होइ॥२८॥असाध्यगदो। जाइ
सुमारुतपित्तगहे। पित्तजायकफ
गहे। कफम्रावेतबकंठही। प्रां
णनजेतबदेह॥२९ग्रर्थ। जोवा
युपित्तकेघरहोवेतो। अनेंपि
तकफनेघरं[illegible]ने। कंठमेंकफ

११

आवे। तेरोगीजांणतजेततकाल

।२९। कंठविषेकफहोइ। निश्चा

दायफूनिशीतदिन। मरेजोरोगी

सोइ। कहुनवबनेंउपायतसु।।२

०अर्थ कंठमेंकफआवे। एत्रश्चाम

दाधनउपजे। फेरसीतलकोपऊवे

। तोतेदिनमरेनासऊवे। तेहनेंउ

पायनहीहोयतेमसुपावें।।३०।

गुदाचक्षुश्रस्रहीनष्वर। कास।

श्वासफूनिजासु। व्याऊलहीवि

कीसोजततुं। तिहीजमपुरीवा

सु।।३१ अर्थ।।...यसरइ घ

६२

णुबोले। हीनस्वर। षांसीस्वासजी
सकुंहोवे। जीवव्याकुलहीचकी
आवेफकारआवे। तेहनेंजमपूरी
मेंवास॥ ३२॥ हृदयचरणकरना
शिका। नासिकुंवेहिमजासु। सी
सतपजाकोरहें। यमपुरीनाको
वास॥ ३३। अर्थ। बातिपगहाथ
नाक। नासिकुंवेहिमजासुकेह
तां श्रीतलऊइ। मांघ्योगरमजीस
कोहोइतो। तेहनेंयमपूरीवास
॥ ३४॥ दर्पणघृतजलतेलमें। ८
छायादेषे ... ओररहितततुं

देषिइं। नासपविमहिजोनि॥३२
अ। आरसीमांघृतमांपांणीमांतेल
मां। छायादेषीइं। मस्तकरहीतसरी
2 रदेषेतो। नासमसुपांमे॥३३॥कर
तविचारदीपकबुझे। आवेकबु
नांध। मतिलजाडुतिनासकुइ। ना
सलेइजमफंद॥३४ अर्थ। वीचा
रकरौजेरोगीआगलदीपकबु।
काबीइं। जोगंधनावेतोतेहनीम
तिलाज। क्रोधहोयतोमसु। ने 63
हनेंजमपंधलेजाये॥३५॥मंज ६३
नकीजेतीनअंग। करपदहृदय

निहारि। सूकेतनसूतनकालए। सो
मतहोइ विचारि॥ ३५ अर्थ। स्वा
नकीएसेंतीनहूठा। हाथपदस्
दयनीजोवे। पांणीसूकेसरीरनो
ततकाल। नेतनकाल्मसुपां
मे॥ ३५॥ अथकालचक्रं। दोहरा।
आद्यादिसूअंतमृग। मध्यमूलफ
निसोइ। नक्षत्रइंदुरविनामनर
।एकनसाजबहोइ॥ ३६ अर्थ। आ
द्रानक्षत्रआदिदे। मृगसीरअंत
देमध्यनागमूलदीजे। चंद्रनक्ष
त्रसूर्यनक्षत्रगीयानो। नांमन

स्त्र एतीनन्नूनदात्रआवे। एक
नाडीइं। आवेतो॥३६। रोगीमृतु
कचिंतवे। जहांजायजमधांम।
ओसिवकह्यो विचारिकें। काल
चक्रधरिनांम॥३७॥ अर्थ। जांणि
जेंरोगीमृतु। जीहांजायजमनेघ
रे। शिवजोपार्वतिप्रतेंकहेछे। ए
कालचक्रकहीजें॥३७॥ इतिपं
डितवैद्यकेशोदासनेंनसुषविर
चितेवैद्यमनोत्सवे। नाडिपरीक्षा
वातपित्तकफनिदांन माधवनिदा
नं नामप्रथमसमुदेशः १ अथ

13

64

ज्वरलक्षणं॥ हिका विड़्ग्रह मूर्छा। कासस्वास अतिसार। वमन अरूचि अंगभेद रंट्। रदरज्वरलक्षणसार॥ ३० अर्थ हिचकी वितभ्रममूर्छा। कासस्वास। अतीसार। त्रलोक रूधा नही। हाफफूटणी। रस्वाणद्रखानेद ज्वर जांण वा ॥ ३१॥ अथ पित्त ज्वरलक्षणं दोहा॥ मूर्छाट्रिषा प्रलापफुनि। शिरोवर्त्ति भ्रमचित्त। नेत्रदाघकटुतावदन। एलक्षणज्वरपित्त॥ ३२ अर्थ मूर्छाआवे। ट्रषा अजंप। अस्त

कन्नेम। दुषवित्नभ्रम। नेत्रबले
मूषकम्भ्रहोइ। एतलक्षणज्वरपि
त्तके॥ ४९॥ अथकफज्वरलक्ष
णं॥ स्वासकासरोमांचगुरु। षेह
र निद्राशीत। वमनअरुचिमूष
मधूरता। कफज्वरलक्षणमीत
॥ ५०॥ अर्थस्वासकासरोमनजा
रहे। आलेषमनिद्राप्रितलाइ। उ
नाटन्नूषनही। मूषमीठारहे। ए 64
कफज्वरलक्षणकहीइं॥ ५०
अथवायुज्वरलक्षणं॥ शिरकं ६५
परोमांचभ्रम। शीतकफज्वर।

नाय। मोहसिथलजूकषायमुष।
एलबनज्वरवाय॥ ४२ अर्थ॥ त्रि
रषाजवालननारहे। वीतत्रमक
फतापअरूची। मोहसिथल। सरी
रकसाइलमूष। एलक्षणज्वरवा।
यनांकहो॥ ४२॥ अथमलज्वर
लबिन। सोरठा॥ दाघसोकपरला
प। अस्विपीडसिरवर्त्तिभ्रम। एल
बनमलताप। कहेजूवैद्यविचार
कें॥ ४२ अर्थ। दाघसोक सरीरव्या
कुलता। हाथेअस्थीपीडसिराभ्र
म। एलछनमलज्वर। एवैद्यवीचा

१५

रीकेंजुमदकरे ॥ ५२ ॥ अथ जीर
ण ज्वरलछनं । दोहरा: ॥ वमनविरे
चनजुदरजुष बहुप्रकारहोइ ।
तास । लछनरसज्वरकेकहे । दे
षिग्रंथसुप्रकास ॥ ५३ अर्थ । वम
नविरेचन । पेटपीड़ । घणीप्रकार
आवतोहोइ । एलछनरसज्वरके
कहे । अनेकग्रंथदेषीकेकह
ताहुवा ॥ ५३ अथ षेदज्वरलछ
नं ॥ निद्राजंभसुटितनन । होत
अंगअस्वेद । कह्योजुवैद्यविचा
रकें । एलछन ज्वरषेद ॥ ५४ ॥

निद्रा जंभाइ देही हाथपांवफु
टै। प्रस्वेद अंगमांसोइ। वैद्यंवि
चारिकें कह्यो। एलक्षनषेद ज्व
र कह्यो॥ ७७॥ अथ द्वंद्व ज्वर॥ जै
नें नवमन असक्तितन। उदरपी
र फूटि अंग। एलछण ज्वर द्वंदि
के। कह्यो ग्रंथप्रसंग॥ ७८॥ अ
थ कांसज्वरलछनं॥ अर्थ जंभा
इ उलांट। देहि में असक्ति। पेट
पीड। हाथपांवफटे। फूटणी ए
द्वंद्विज्वर लछन। ए वैद्यं कह्यो
ग्रंथमें थी॥ ७९॥ शीसतनपतिपर

१६ 16

श्वेदनन। करपदसीतलहोइ

।एलक्षणज्वरकालके। तिस

हीउपायनकोइ॥४६॥अथ।

सीमंतपेपरश्वेददेहीऊंरहे

।करपांउंसीतलहोवे। एलक्ष

णज्वरकालकहीइं। तिसही

उपायनही॥४६। अथकफज्वर

परपक्कमरजादसोरठा॥ वायु

सातपित्तनवजांणो। कफबा 61

रहदिनकहीप्रमाण। सन्निपा

तमरजादप्रमाण। कैंजीवेके ६१

मरें निदांन॥४७॥अथ॥ वायुसा

त दिन पित्तनो धणी न॰ दीन । क
फनो धणी १२ दिन प्रमांण । स
न्निपात नो धणी नो प्रमांण नही
। के जीवे के निदांन मरे ॥ ४७ सो
रठा ॥ सप्त दिवस गंध वात । द
श वासर कहे पित्त के । कफ वा
द श दिन आह । जांनकुं ज्वर प
रपक्क जाय ॥ ४८ अर्थ ॥ सात दिन
वायू ने कफ । दश दिन पित्त के
। कफ बारह दिन के होइ । जांणे
ए पित्त कफः । वाय मे जोर जाइ ।
तो ज्वर परपक्क न होय ॥ ४८ ॥

१७

17

त्रिरकंमूपरश्वेदतन। देहीलन
घुताजास। मुषयाकौबरून्नू
षविक। एतनबन्नज्वरनास॥
४०९ अथ॥ त्रिरमेंपाज। प्रश्वेद
देहीकुं। देहीदुर्बलहोइ उस
को। उसकामुषपाकबजुत।
नूषहोइ। एतनबनज्वरमेंनास
मस्तु॥ ४१०॥ अथज्वरोपरि लघु
सुदर्शनचूर्णलिष्यते॥ संुविक
टाईपुष्करमूल। काकमासी
गीककूकचूर। मरूलेवीमिलि ६०
इ आंमला। सांलिसपर्णहलन

दपीपरा॥ ५० अर्थ॥ सुंठरीगणी
पुहकरमूल। काकमासीगीऊ
टकीकचूर। मरूलेठी। गुलवे
ल। आंमला। सारिफल। पीठव
नी। हलदपीपर॥ ५१॥ मिरीच
करोंजी त्राहिजुमांनि। चंदन
पीतपापरा आंनि। अगर धमा
साऊनामिलाय। लोचनवा
लामूवपाय॥ ५२ अर्थ॥ मीरी
च। कलोंजी। त्रायमांन। चंदन
पीतपापडा। अगर। धमासो। ऊ
नाबालि। वालो स्याह। मरूठे।

॥५१॥ नजपतिसमुरदारहिगां
ण। मोथापटोलजवाइणि आ
ण। चित्ता अजया। पिपलामुल।
एउषधमेलोसमहल ॥५२ अर्थ
नजपत्रजदेवदारु। मोथापटो
ल अजवायणि। चित्रकपीलपा
पमा पिपलामूल। एउषधबरोब
रमेलवा॥५३॥ नेपालाकिराइ
ताजांनि। सबउषधतें आधा आं
न। इनउषधकोचूरणकरो। ना
मसूदर्शनलघुतिहिधरो॥५ हूए
३ अर्थ॥ नेपालाचीराइताएबे

उषध। सर्वतेसमधथी। अर्द्धवज
नलेवा। एहनोचूरणकीजेंक
पफबांण। एलघुसुदर्शनदीत
कुंकहे॥५३ चूरणपीजेंजल
मांहिघालि। आवेंज्वरनासे
ततकाल। हाथमोहनिद्रान
रहाइ। पांडुरोगकमलातसु
जाइ॥५४अर्थ॥ चूरणपीजेंपा
णीमांहीषाइं। आवेंतापजा
तीरहे। हाथचीत्तभ्रमनीद्राआ
वे। पांडुरोगकमलोजाइ॥५
५। हियेगदत्रिषासूलनसबजाइ

सन्निपाततेरहेनरहाइ। भ्रम
शुक्रवाकीरोगनसाय। स्वास
कासपीनससबजाइ॥५५॥ अर्थ
हीयेसूलत्रिषासूलसर्वजाइ
सन्निपाततेनरहै। देहीभ्रम।
शीतवाकीरोगजाइ। षांसीस्वा
सपीनासर्वरोगजाइ॥५५॥ गा
दअनेकनासेहितजांणि। हम
एकिंचितकहोवषांनि। सक
लरोगकुंचक्रसमांन। नांमसु
दर्शनलघुएजांनि॥५६ अर्थ॥
गंभीरवाय। एतेरोगजाइ। वैद्य

नहोयतनबलीजीइं ॥ ६३ ॥ एकर
तीजुप्रमांणमाहि। षंडसुदीजें
तास नातउघसूंपष्पदे। होयस
वेज्वरनास ॥ ६४ ॥ अर्थ ॥ एकर
तीजूदीजेंप्रमांण। षांडसूंदीजें
।नातहूधसूंपष्पदेण। सर्वज्व
र जाइ ॥ ६४ ॥ कह्योज्वरांक्रमाच
कमत। पंडितलेजुविचार। ना
सेताप अनेकविध। सिद्धपुरुष
संसार ॥ ६४ अर्थ ॥ कह्योएज्वरां
क्रमाचकेग्रंथमें। पंडितलीज्यो
ःवेचारकें। सर्वज्वरनासे। अने

२२

कप्रकारनो। सिद्धपुरुषसंसा
रमें गपनेकह्यौछे॥इथ अथज्व
रांकुशगुटीका:॥पीपलमन
सील नींबफल। रसकरेलापा
ड। गोलीकीजें पीसकें। ज्वरत्रि
दोषमिटाइ॥इथ अथी॥पीपर
मणशीलनीबोली। गोलीकी
जें करेलारसमें पीसीनेंदीजें
वातज्वर। कफपीत्तनासे॥इथ
अथपीत्तज्वरचूर्णसोरठा॥पीत
पापरा आनि। जलसों कीजें पी
सकें। टंकएकपरमांन। दाघपि ७२

त ज्वर नांर्हे ॥६७ अथ॥ पीतपा
परा आनिकें। पांणी सूंपीजें पी
सीनें। टांक एक पर मांन। दाह
पित्तज्वर नांरहे॥६७॥ अथ पित्त
दाघज्वर को चूर्ण चौपइ॥ लोचन
वालो मोथा आनि। चंदन पीत।
पापरा जांणि। सुविषेसीर नीर
सोलेय। दाघपित्तज्वर नास करे॥
रेइ॥६८ अथ॥ स्याह वालो मो
था। चंदन पीतपापरा। सुविसु
पेद वालो पांणी सुवाटी॥ कपड
छांण करी लीजें। पीत्त दाघज्वर

२३

नासकरे॥६७॥अथकफज्व

रकोनासदोहराः॥सूंठिमिरिच 23

अरुकायफलपीपलिताहि

मीलाइ।नासजोलीजेंनीरसों

।कफज्वरबिनसहिजाइ॥६८

अर्थ॥सुंठिमिरच।कायफल

।पीपरिमांहीमीलाइयें।नास

लेवेपांणीसुं।कफज्वरबिनसे

जाइ॥६९॥अथवायज्वरको

चूर्णसोरठाः॥सुंठिमोचरसपा 74

य।पिपरमिरिचकिराइता।क ७४

टूशिवासुरपाय।चूरणहरेजू

वायज्वर ॥७० अर्थ॥ सुतिमोच
रस पिपर मिरच। चिरायता क
टू की हरडे। देवदारु। चूरणकी
जें वातज्वर जाइ ॥७१॥ अथ म
लज्वर को क्वाथ॥ पिपलामूल अ
रू कणियाल। मोथा कटूहरित
की सूंठ लताम हि पाय। पीसपी
योजलतमसु। कीयोकाथत
तकाल। मलज्वर कफ नासे सऊ
॥७२ अर्थ॥ पिपलामूल गोटिल
जाल। मोथा कटूकी। हरफे सुंठ
लमांहें मीलावे। पीसीपीवेजुंना

पांणीसा[illegible]। काथकरपीवें। म
लज्वरकफनासकरे॥७१॥ अथ
चूरणरसज्वरके. दोहरा। अजमो
दाजूहरितकी। सूचलतामहि
पाइ। पीसीपीजैजलतनससूं। र
सज्वरछिनमेंजाय॥७२ अथ
अजमोदा। हरडेदल। सुंचलमां
हिमीलावे। पीसीछांणजेंकापां
णीसुंपीवे। रसज्वरनासेछिन
में।॥७२ अथषेदज्वरकोउपाई
॥मर्द्दनकीजेंअंगकों। तेलनलि
लांकोलाइ। फूनिमजनजल

७५

75

तससों। षेद ताप[illegible]जाई ॥७
३ ॥ अर्थ ॥ मर्दन कीजे अंग को। ते
न तीलों नो मर्दन कीजे। उपर
मज्जन करे। उस्न पांणी सों। षेद
ज्वर नासे ॥७३॥ अथ हहिज्व
रचूर्ण: ॥ पिपर मिरिच किराइता
सुंठ हिंग सम घालि। चूरण षा
इटंक इक। ताप हहि कऊंवा
लि ॥७४॥ अर्थ: ॥ पिपरि मिरच।
सुंठि हिंग बराबर मिलावे। चू
रण षाइ एक टांक। हहि ज्व
रजाइ ॥७४॥ अथ वाय पित्त।

२५

कफचूरण॥ मोथासूंठिकिरा
इता। पितपापडाजांणि। पिप
रकुंगिलोइसुण। एसबपि
सकुंआंणि॥७५अर्थः॥ मोथा
सूंठि। किराइतापितपापडा
। पिपरकरुगिलोइ। एसर्वपी
सीकरीआंण॥७५॥ यहचूर
णघसलकर। जलसोंपीजेंट
कदोइ। शीततापनरहाय। अ
निलपित्तकफदोषतहीं। हो
इसबेंज्वरनास॥७६अर्थ। एचू
रणसर्वमगटबे। टांकदोइपी ७६

76

वेपांणीसुं। शीततापनरहे। आ
निपित्तकफदोषते। सर्वज्वरना
से॥७६॥ अथसीतज्वरचूरणदो
हरा। पीपरसुंविगिलोइफनि
।गूफमांताद्दिमिलाइ। जलसुंपी
जेंटंकदोइ। सीततापनरहाइ
॥७७अथ॥पीपरसुंविगिलोइ
गूफमांगोलीकीजें। पांणीसुंपी
जीइं। टांकदोइअमांण। शीत
लोइतावनरहे॥७७। अथवि
षमज्वरकोचूरण॥ पीपरिझीवा
जूंआंवरे। चित्रकसिंहवसोइ

२६

चूरण पीजें नीरसुं। नासै विषम
ज्वर होइ॥७८ अथ पीपर हरड़े
आंवले। चित्रक सिंधा लुंण चू
रण कीजें नीरसुं पीवे तो। विषम
ज्वर नासे॥७८ अथ कासस्वास
कफ विषमज्वर जाइ॥ वंदपथन
॥ कटाइ पुहकरमूल समसुं
सोंठीमी लोइ आंण। यह काथ
पीजें जलमीले। कफ कासस्वा
स विषमज्वर जाइ॥७९ अ। रीगा
णी पूहकरमूल। ए सर्व बराब
र सुं ठगी लोइ। ऐसो काथ करि ७७

पीवैतो। कफकासश्वासविषम
ज्वरजाइ॥ १९॥ अथचतुर्थज्वर
कुंधूणी॥ गूगलनगलूपांषफनी
रांमवस्त्रमहिमेली। धूणीदीजे
भ्रातउवि। ज्वरसोथाइरैलि॥
२०॥ अर्ध गूगलनगलूनीपांष। नेर
स्पावस्त्रमीलाय। सर्वगातस
मेधूणीदीजें। चोथाइज्वरनासे
॥ २१॥ अथकासश्वासज्वरकोअ
वलेहु॥ मधपीपरिपीसकें। म
धूसुंचाटोआंणी। हिकाकास
स्वासज्वर। स्त्रीहरोगकीहांण

२१

(3)

।८१ अर्थ।। गोटीपीपरपीसके।
सहतमेंमीलायषावेतो।हिक्क
षासस्वासज्वरनासेफोहोजा
इ।।८१।। अथसनीपातकूआनं
दभैरवरसः।। सिंगरफ मिरचैपी
पलि।विषटंकण जुममांन।अ
द्रकरसगोलीकरजु।रतीएक
परमांन।।८२ अर्थ।।सिंगरफमि
रचपीपर।वछनाग।सोहागोए
सर्वबरोबर।आद्रमारसमांगो
लीकरणी।रतीएकपरमांण ७८
।।८२।।आनंदभैरवरसकरूं।स

सन्निपात। आमबवेसी श्लेषक
फ। होइ विषमज्वर घात॥ ८६ अ
थ॥ एरसचिंतामणी। हरकरे स
न्निपातनें। आंमवालशीतबवे
सी श्लेषकफ। विषमज्वर घात।
ज्वर एते रोग जाइ॥ ८६॥ अथक
नकसुंदरि॥ मिरीचिपीपरीसोव
वीष। गंधकपारद जांणि। टंक
होइ एलीजीइ। कनकमूलपत्र
यआंण॥ ८७ अर्थ॥ मिरचपीप
रि। सोंठवछनाग। गंधकपारद
जांणो। टांकदोइ रएनेषधलीजें

धतूरामूलनीछालिटांक।३लीनी
जें॥८७॥मर्द्दनकीजेंतीनदिन
रसधुनांगरेपाइ।समभागोलीक
रकों।प्रातउठीजबषाइ॥८८औ
षधः॥तिनदीनरसनांगरानामां
षरलकीजें।बरोबरभागोलीबीधी
इ।प्रभातसमेषावेतो॥८९॥स्रा
न्निपातश्रीतांगकफ।हिमज्व
रवेलाजाइ।मंदाग्निउदरनम
।एतेरोगमिटजाइ॥९०औषध॥स्रा
न्निपातश्रीतांगकफ।शीतज्वर ८०
वेलाज्वर।मंदाग्निउदररोगनो।

जोर चिनन्त्रम। एतलोरोगमिटा
वे॥ ८९॥ अथअगारहमूलक्का थ
सन्निपातको॥ धनियामोथाचि
राइता। कटुइंद्रजुजांण। देवदा
रदसमूलसूंठि। अरुगजपीपल
आंनि॥ ९० अर्थ धाणामोथाचि
रायता। कुटकीइंद्रजव। देवदा
रु। दसमूलसूंठि। औरगजपीपर
आंणो॥ ९०॥ काथजुकरकेंपी
जीइं। सन्निपातज्वरजाइ। तंद्राहि
का। वमनकफ। कासस्वासमीटे
इ॥ ९१ अर्थ काथकरीनेंपीवे॥

सन्निपातज्वरजाइ। नींद्राआवे
हीचकीउलटकफ। षासस्वास
एतेरोगनासे॥८१॥ अथसन्नि
पातकोअंजन॥ त्रिफलात्रिगुटा
हिंगवच। सिंधाकटू मिलाइ। पी
तकुसरिसोंसिरसफल। एऔष
धसमपाइ॥८२॥ अर्थ॥ हरडे ब
हेडेआंमला। सुंठमिरिचिपीपर।
हींगवच। सींधालूंण। कटूकी।
मीलावनां। पीतपापडासीरसव
सीरसबीज। एऔषधबरोबरघ
सीइं॥८२॥ अजामुत्रसोंपीसक

रि।करोअंजननयनांहि।अस
मारउदमादभ्रम।आन्निपातन
रहाहि॥ए१अर्थ।बकरानामुत्र
संपीसीइ।नेत्रअंजनकरे।अस
मारहरस।चीत्तभ्रम।उदमाद
मस्ती।आन्निपातजाइ॥ए१॥ति
मिररोगनिमिअंधता।नूतदोष
सिखर्ति।वैद्यजकहेंविचारकें
एतेरगानिवर्त्ते॥ए४॥अर्थ॥ति
मिररोगरउंधो।नूलसाकिनीदो
षमस्तकभ्रम।वैद्यजोकहेविच
रिनें।एतेरोगजाइ॥ए४॥अर्थ

३१

31

अनिपातकोऔषध ॥ मोथासुंठि
चिरायता। सूंठिजोमांहिमिलाइ
।काथसोंकरिकेंपीजीइं।सन्नि
पातज्वरजाइं ॥ ८४ अथ ॥ मोथा
सुंठिचिरायता। सुंठिमांहिमिला
वनां। काथकरिपीवेतो रोगीस
न्निपातज्वरजाइ ॥ ८५ ॥ अथः स
न्निपातकोऔषध ॥ ॐ कमलवंग
जुपीपरे। अकलकराजुमिलाइं
।अद्रकरससोंपीसीएं। टंकए
कजोषाइ ॥ ८६ अथ केसरलवं
गपीपरी। अकलकरामिलावनां

८२

82

आदानारसमांपीसीइं।टांक
एकषाइतो॥७६॥सन्निपात
उन्मादकफ।नीद्रामारुतका
स।शीतभ्रमन्त्रमंमोहज्वर दू
नकोकरेविणास॥७७अर्थ॥
सन्निपात।उन्मादकफ।नीद्रा
शीतवायुकास।शीतभ्रमभ्र
ममूर्छाज्वर।एहनोविनासक
रे॥७८सनिपातकुंगुटिका॥
ब्राह्मीत्रिकटुलवंग।केसरल
जपिंराइता।अकलकराक
रोंज।रुद्रजीरसमलोजीइंस

महावघजोलेइ।गोलीकीजेटंक
इक।प्रातसमेजोषाइ।तेरेसन्नि
पातजोनविरहे।हियामघिरत
सजाइ।शीतभ्रमततकालही।
।एठ औषै ब्राह्मीसुंठिमिरीपीपर
लवंग।केशरतजचिराइता।अ
कलकरा।कलुंजी।स्याहजीरा
बरोबरलेणं।बरोबरमएका
ठाषलेवे।मोटीगोलीटांक१नी
लेवे।प्रातसमेजोषाइतो।तेरे
सन्निपातनरहे।भ्रांतिनारोगमा ८३
पवायजाय।शीतभ्रमजेतत।

कानजावे ॥८०॥ अथ अतीसा
रीरा विकी अचौपई ॥ मिरिचम
स्तकीहाफिमकलि । वंसलोचन
आंबागोवलि । लोदमरहवीसु
कडमाय । मांजुफलसोंमोचर
साइ ॥८८॥ मीरचमस्तकी
हाफिमकलि । वंसलोचन आं
बागोवली । लोदमरहठी । चंद
न । धावडीफूल । मांजूफलमोच
रस ॥ २०० ॥ कडाजायफलकिंक
रफलि । कायदोनागअवरस
मतुल । सबऔषधनागजूआर । ध

३२

पेगाबीजनीमीजीनीजें ॥२००॥
पोस्तजलसुंकिजीइंगोली। टां
कएकपरवांनधरीजें। तंडुलनज
लसुंपीजेंआंनि। ताकोगुणऊ
एसकेवषांण॥१॥अर्थ॥पोस्त
नापांणीसुंगोलीकीजें। टांकए
कनेपरमांणकीजें। चोषानापां
णीसुंपीवेआंणी। तेहनागुणए
ऊणकहेवषांण॥१॥ओदन
महामथ्यदेजास। अतीसारसु
नोहोइनास॥२अर्थ॥बाल्बि
वलमगादेवपथ्य। अतीसार

८४

नोनासहोइ ॥२॥ अथहड्गंगाधै
रचूरणं॥ मोथाअरनूंसूंवसूष
इ। बेलपतीसमोचरसपाइ।लो
दलजालूअंबके बीज।ऊकन
पावइंदजबलीज ॥३॥ अथी॥
मोथाअरलुसोसुठि।धावनी
बेलपत्र मोचरस।लोदलजा
लू।आंबागोठली।ऊकनागलि
पाटइंदजव॥२॥लोचनवा
लाफनिमधूपाइ।तंडुलजल
सोंपिबोमिलाइ।मगनालनो
जनजबलेइ।अतिसारषिणमां

३३

द्वियंजाइ॥४॥अर्थः।स्यावालो
सेनसुंमोलीकीजें।चोषानाधो
वणसुंगोलीषावे।बासीजात
नोजनकरे।अतिसारयंजेघि
णेकमें॥४॥अथजलघुगंगाधरचू
र्णदोहराः॥सुंठिधावडीफूलमो
चरस।अजमोदामांहिमीलाव
नां।पीसीबासीसुंपीजीइं।अति
साररोगजाइ॥५॥श्लोक॥सुंठि
धातुकीमोचरस।अजमोदाजु
मिलाइ।पीसीबाछिसुंपीजीइं ८५
अतीसारमीटीजाइ॥५॥अथः

॥८॥ लोद्र इंद्रजव मोचरस। मोथा
बेलगीर धाय। गुलसों गुटिका क
रो। अतिसार मिटि जाइ॥९ अर्थः
लोद्र इंद्रजव मोचरस। मोथा बेल
गीर। धावकी। गुड़ में गोली करनां अ
तिसार मीटि जाइ॥९॥ अतीसार
कोचूरण॥ सिंधव सुंचल हिंगु व
च। त्रीवा पतीसर लाइ। पीसी पी
नु जल तमसुं। आंम अतिसार मि
ट जाइ॥१० अर्थः॥ सिंधव सोंचल
हींग वच। हरड़े पत्रज मीलावनां
। पीसी पीयो ग्रहण पांणी सुं। आंम अ

२५

नीसारमीटि। बंधहोइ ॥२०॥ अथसं

35 ग्रहणीरोग॥ धनिआमोथासूंठिफ

नि। बालबिलकटुघालि। काथजु

करिकेंपीजिइं। संग्रहणिक्रुंटा

लि॥२१ अर्थ॥ धाणमोथासूंठि।

बालबिलीकरुमिलावे। एहनो

काथकरिनेपीवेतो। संग्रहणी

नेंटाले॥२२ अथसंग्रहणीःवायः

श्लनकोचूरणचोपई॥ मोथासूंठि 8

मिलोइपतिस। तसनिरसोंपीजें

पीस। आमअरूचिसंग्रहणीजाइ ८७

वायसूलनविनमांहिजाइ॥२३॥

अर्थः॥मोथासूंठिगिलोइपत्रज
।ग्लपांणीसुंपीजीइं।आंमअरु
चीसंग्रहणीजाइ।वायशूलनि
णेकमेंजाइ॥१२॥अथआंमअरु
चिसंग्रहणी॥लोदपाठलजा
लमोथा।बेलसूंठसोपावहों।
धनियापतिसगिलोइ।वालोकु
काधायमिलावकं।समपीसिओ
षधकाप्यसूकीजीइं।प्रातउठि
केपीजीइं।आंमशूलअरुचिसं
ग्रहणीनासईहीनहीकाजाइ॥
१३॥अर्थ॥लोदपाठलजालू॥

मोथा। बीलीगीरसुंठ। धाणापत्रज
मिलोवालोकफाग्नलिधावफि।
फुल। बराबरलेषयकूटीकाथकी
जें। प्रातसमेजोपीवेतो। आंमवा
तसूलअरुविसंग्रहणी। छिनमें
जाइ॥१३॥इतिश्रीपंडितकेसोदा
सपुत्रनयनसुषविरचितेवैद्यमनो
त्सवेज्वरशान्तिपातअतिसारसंग्र
हणीरोगप्रतीकारोनांमद्वितीयोस
मुद्देस॥अथबवेसीरोगविकीत्सा।
सारंगधरात्सूरणवटिका॥ एकम
रिचविषसूंठिसूनिचित्ता। आव

अमानसूरणषोफअ नागलो। चूर
णकरऊंसुजांण॥२४अर्थः॥मीर
चटांकर नागा। वछनागटांकर१।सूं
ठिटांकर१।चित्रकर१।आवर नाग
लेणांसुरण।सालेनागले।चूरण
करवोसुजांणनरं॥२४॥ उगुनऊ
गुफपायकें।गुटीकाकरऊंटंक
होइ।पेट आफरागुल्मगुद।नास
बवेसीहोइ॥२५॥अर्थ॥बिमणो
गुफघालणो।टांकबेप्रमांणगो
लीकीजें।पेटआफरागुल्मरोग
।गुदाशेगनासीकारोगबवेसी

३७
रोगसर्वजावे ॥२५ अथबेबेसीको
चूरणमोरगा: ॥ हथीवडीसोंश्रा
37 नि। घृतपाइसुंपीजीइं। टांकसा
तपरवांन। रक्तबवेसीनांरहे ॥२
६ ॥ अथ ॥ मोटीहथीलाइकेंघूंट
करछांणीघृतपांणीमेंपीवे। सा
तटांकवजन। षुनीबवेसीनांर
हे ॥२६ अथरक्तबवेसीकोचूरण।
सूरणवचअरूमूसली। ऊकंा ४४
सुवसमभाय। पीसीबासीसोंपी
जीइं। रोगबवेसीजाइ ॥२७ अथ ८९
॥ सूरणवचषूरासाली। मूसलीसू

ओःपीजीइ।होइगदरह्कमिहंनि।
।३०।अर्थः।।गायनामत्रमांपावे
३तीनतानटांकनोवजन।७दीन
पीवेतोपेटपीडा ऊमिरोगजावे।।
३०।।अथसूलरोग।।सोंचलहिंग
जूसंविपूक्करमूल।आनऊसमक
रित्ताय।पीसपीऐंजलतमसु।सूल
विसूचिकाजाइ।।३१।अर्थः।।सु
चलनूणहींगसूंठि।पुहकरमूल
।लावाबराबरिलीजें।पीसीनेंगंना
पांणीसुंपीवे।सूलविमनगलाटस
वजाइ।।३१।।अथहिंगवाष्टकचू

मिरचेपिपरीहींगुसुंठि। सींधाजीरा
होइ। अजमोदाजलनससों। कब
हिसूलनहोइ॥३२॥ अर्थ। मीरीपी
परहींगसूंठ। सींधालुंणहोयजी
। अजमोद। जंनापांणीसुंपीवेतो
। कदिसूलनरोगनहोइ॥३२॥ अथ
चूरणसूलको॥ पिपरसूंविह
रितकी। सोंचररतिसमांन। तसो
टकसोंपीजीइ। नासेसूलकाजा
नि॥३३॥ अर्थ॥ पिपरसुंविहरडे
। सुंचललुंणएरतीप्रमांण। जंनापांणी
सुंलेवेतो। सूलरोगनोनासहोय॥

होइ ॥५४ अर्थ॥ पांणी षीगोलीकी
जें। एकटांक बरोबर कीजें। रात्रिस
मेमुषमांराषीजें। षांसीस्वासनर
हे॥५५॥ अथ षगोलीषंषकी॥ वासा
सुंठिपिपरि। एसमपीसकुंआंलि गो
लीकीजेंसहतसों। होइषंषकीहां
नि॥५६ अर्थ जवासो सुंठिपिपरी
एबरोबरपीसे। गोलसहतसुंबांधे
षांसी धांसीस्वासनरहे॥५६ अथ
गोलीषंषकी:॥ हरमेसूंठिजापी
परी। जवषारसुमिलाइ। गोलीगुड़
सुंबांधिइं। षंषततःषिणजाइ॥५

हरडेसुंविपीपरि। जवषारमीलाव
णां। गुडमांगोलीकीजें। षंषषांसी
स्वाससर्वजावे॥५७॥ अथषांसी
कचूरण॥ वासासुविपिपरि। क
टाइजवषार। पीसपीजेजलतसुं
।षांसीधांसीजाइ॥५८ अर्थ:॥ जे
वषार। जवासासुंविपीपरी। रांगली
जवषारनेंपीसीनें। पीयोतसपां
णीसुं। षांसीधांसीजाइं॥५८ अथ
कफषांसीकीगोली॥ विषमिरि
चकहजोसूनि। ३ अतियपंचप्र १
वांन। गोलीमुगसमान। कफषां

व तेंडुगालिनवातले। क्षयिरोगष
सीजाइ॥४४॥अर्थः॥कमलपांन
पटोल।नागकेशरमिलावनां।एते
सधतेंहूणीमीसरीमिलावे।क्ष
इरोगजाइ॥४५॥इतीदृतीयस
मुद्देशः॥इतिपंडितकेसोदासपु
त्रनंनसुषविरचिते।हरसचगंद
रगुल्मआंमवात।कृमिसूल।पांडू
कमलोकईरोगप्रतीकार।नामतृ
तीयोध्याय॥अथहीबकीरोग
दोहराः॥बीठमषीकीलाषरस
पीसकूंदोनुंपाइ।नासजुलीजेंप्रा

तगति।कुचकीबडुरनसाय॥४
६ अर्थः॥मषीकीदूगार।नाषरस
एदोनुपीसकें।नाकमेंनासलीजें
।कुचकानआवें॥४६।अथकुच
कीचूरणः॥मिरचिलवंगसिता
सुनो।गीरबेलकीजाँनि।मधूसुंली
जेंपीसकें।कुचकीजायनिदान॥
४७ अर्थः॥मिरचिलवंगहरडे।बे
लगीरनांषीइं।मेलसुंलीजें।दीच
कीजाइ॥४७॥अथकुचकीकी
धूंणी॥मलसीलहरदजूपाइकें।
पीसऊंसमकरीजोग।चंदनसूंधू

नीदीजीइ।नासेदीवकीरोग॥४
८ अर्थ॥मणञीलदलद।दोनुइ
कजागामरदनकीजें।चंदनसुमि
लायधूंनीदीजें।दीवकीरोगनासे
॥४८ अथ बहिकी अवलेह:॥
सोरठा:॥ चंदनमोथाइलायची
।लजाकणालवंग।बेरगिरिअरु
कमलफल गजकेशरीसुसंग॥
४९ अर्थ॥ चंदनमोथाइलायची
लजालूपीपर।लवंगबेरनिगिरि
कमलगटा।नागकेसरमापेंचूर
णकीजें॥४९॥इनकोचूरणकीजी

ई। मधुमीसरीसुं मिलाइ। प्रातसम
मेलबचाटिइं। बहुरि रोग जू मिटाइ
।५०॥ अर्थ एहनोचूरण कीजे। मधमें
मीसरी मीलावे। प्रातसमे चाटे तो
बहुरि रोग जावे।।५०। अथ बहुरि रो
गअवलेह: सोरठा:॥ लजासिता
लवंग। कमलबिज्ञइलाइची। चा
टऊ मधु के संग। बहुरि रोग कानास
होइ।।५१। अर्थ।। लजालुहरफेल
वंग। कमलगटा। इलाची। सेतमें
चाटणं। बहुरि तलौं टजाइ।।५१।।
अथ स्वासरोगप्रतिकार:॥ चौप

पेट। ऊकमाबानिसुव। सर्वबरोब
रपीसीबासीसुंपीजीइं। बवेसी
रोगसर्वजाइ ॥२७॥ अथ भगंदर
रोगचिकीत्सा: भगंदरकोलेप॥
दंतीहलदसोआवरे। पिसऊनि
रमिलाइ। लेपजुकीजेंअ्तन
व रोग भगंदरजाइ॥२८अर्थ:॥
दंतीहलद आंमला। पांणीसुंपी
सीकेंमीलावनां। प्रभातसमेले
पकीजें। भगंदररोगजाइ॥२९॥
अस्थिबिलाइआणीकें। त्रिफ
लारससंजोग। तमोदकसूंला

३८

वकुंजांनिकें। जाइ भगंदररोग
।।१९ अर्थ हाफ बिलाइ नाली जे
38 त्रिफला नारस। तसोदक सुंदे
तां। लेप करता। भगपालीसुं
भगंदररोग जाइ ।।१९।। लेपन
गंदरको सिंधासूं त्रिजूदरड फलनि
।वटपल्लव गुलिलोइ। जायपत्र
घसीजलाइएं। नासे भगंदररो
ग।।२० अर्थः। सिंधालूंणसूं विह 100
रफ़्। वटनापांन। गुलवेल। जा
यपत्रपीसीजलावनां। भगंद १००
रनो नासहोइ ।।२० अथ गुल्मरो

गत्रतिकार॥ सौंचर सिंधासुंवि
हिंग। आछिलूंणफूनिजीण।
अनया पिपर अजमोदा। जनषा
र विडंग समान। इनको चूरण
कीजीइं। घृत सुं षाय मिलाइ
गुलम शूल विशूचिका। अरु
अजीरण जाइ॥२१ अर्थ॥ संच
ल सिंधा सुंठि हिंग। समूद्र लूंण
पीतपापडो। पिपर अजमोद
जवषार। वाय विडंग। बराब
र लेचूरण कीजें। घीमां मीला
य। ४ टांकनें अनुमांन। मूलम

२६

३१

सूलविसूचिका। आलसअजी
रणजाइ॥२१॥ अथ आमरोगचि
कीत्सा॥ दोहरा॥ सरसवसूंठि
सूंहींजणा। विसपयरासुरदार
।कांजीसूंजोलेपीइं। सूलविथ्या
जोनिवार॥२२॥ अर्थः॥ सरसव
सूंठिसुंहिंजणा। वछनागषरसा
रदेवदारु। पीसीकेंकांजीनापां
णीसुंजोलेपलो। सूलरोगजाइ
॥२२॥ अथ पिंगलादिचूरण॥ श्री
मवालकृंचोपइ॥ पिपरपाठिक १०१
टाइजानि। सुंठिअनयाजिरेआ

नि।मोथ्या चित्रा पिपलिमूल।ग
जपिपरिमिलोसमचूर्ण॥२३॥
अर्थः॥पीपरयाढिरंगणीआंली
।सूंठिपीत्तपापड़ो।जीरेलावेमो
थ्याचित्रकपिपलामूल।गजपि
परमेलाबरोबर॥२३॥तपनी
रसूंपीजीइं।आंमवातवेदनन
हीहीस।सूलअनूषकीहानरह
इ।षांसीधांसीषिणमांजाइ॥२४
अर्थ॥उंनायांणीसुंपीवेतो।आं
मवातनीवेदननरहे।सूलअरू
षहीनहोइतोनूषलागे।षांसी

थांसीबीलेकमांजाइ ॥२४ अथ चू
रण आंमवातको॥ दारूहलदए
रंड फूनि। तिहिविडंगपतीस। मि
रीच इंद्रजो आंलके। लीजें सम क
रीपीस॥ २५ अर्थ॥ दारुहलदए
रंड मीजनीगीरी। अतिविसवाय
वडंग पत्रज। मिरचइंद्रजवलावे।
एसमऊषधपीसकर॥२५॥ नस
वारिसोंपिजीइ। आंमवात नरहा
य। कमकोटपीराउदरमहि। या
लीयेजूंपराइ॥२६। अर्थः॥ उंना
पांणीसुंपीजीइं। आंमवातनरहे

एर

ऋमिरोगउदरपीडासर्वजाइ। ए
लीजीइंतोजाइ॥२६। अथआम
वातकोकाथ॥ गूगलगिलोवापु
नर्नवा दारू निसाजूगिलोइ। धेनु
मुत्रसुंपीजीइं। नाससोजकाहेइ
॥२७ अर्थः॥ गूगलहरडेसाटोडी
जड। दारूहलदनिसोतगिलोइ
गायनामूत्रमांपावे। सोजोफेदो
जाइ॥२७ अथऋमिरोगप्रतिका
रः॥ सिंधवअतिवीषकंगफुनि। पीस
इंसमकरिजोग। तप्तनीरसोंपी।
जीइं। नासेऋमीकोरोग॥२८ श्री

४१

सींधव अतिविस वायविडंगा। कप
ड छांण करि बरोबर कीजें। गुंना।
पांणी सुं पीवे तो। क्रमी रोग नो नास
थावे॥ २८॥ अथ क्रमी रोग चूरणं
॥ टकुटा त्रिफला तिवा चतु। निं
ब त्वचा अरु पाड। खदिर कुडासो
विडंग पुनि। चूरण कर द्यो मिला
य॥ २९॥ अर्थः॥ टमृटा त्री फला अ
तिविस। निंबछालि। षरसार कुडा
छालि वायविडंग। चूरण कीजें मी
लावीनें॥ २९॥ धेनूमूत्र महीपाड
कें। टांक तीन परमांन। सप्त दीवस

१०७

८३

६। सौं ठि मिरिच जलपिपरी। काक
राश्रृंगी पूष्करमूल। कचूर नारंगी
मोथ्या रूजीजीइं। जलत मसुंलेरू।
महास्वासकासनासेरू॥ ५२ अर्थ
सुंठ मिरी छोटीपीपरि। काकरासीं
गी। पुहकरमूल। कचूर। नारंगीना
गकेसरमोथ्या। नेंनापाणीसुंलेवे। मो
टोस्वासषांसीनासे॥ ५२ अथ स्वा
सकासकोचूरणः पद्धडीछंदः॥
कटाइ पुहकरमूलजानि। अरू
सूंठि ऊजलपथ्यांनि। एपीससोंपीजें
तमनीर। स्वासकासकीजाएपीर

॥५३॥अर्थ॥रीगणी पुहकरमूल
जांणो।तुरसुं उ कुलथी।एसर्वपी
सीपीवेतनापांणीसुं।स्वासषास
जायेपीर॥५३॥अथ स्वासकास
प्रतिकार:॥ सूंठिबेहडापीपरे।
काकरासिंगीजांण।भारंगीजूकु
बेरफल।एसमपीसकुंआंण॥५
४अर्थ।सुंठ बेहडापीपर।काक
ड़ासींगीभारंगी।दयबेरफल।ए २००
समपीसकेंलीजें॥५५॥गोलीकी
जेंनीरसुं।टंकएकसमसोय।निसा २००
जमूषमांहिंराषिइं।नासषासकी